भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता ।
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA.

H

वर्ग संख्या
Class No. 491·435
पुस्तक संख्या
Book No. P 834
रा० पु०/ N. L. 38.

MGIPC—S19—69/1842/14 LNL (PB)—25-5-70—150,000.

NOT TO BE LENT OUT

Hindi Bhasa Vyakaran Dipika.

॥ श्रीः ॥

हिन्दीभाषाव्याकरणदीपिका

Madhavaprasad Pathak

वाराणसीस्थराजकीयसंस्कृतपाठशाला के अङ्गलो-संस्कृतविभाग के भूतपूर्व सहायाध्यापक

माधवप्रसाद पाठक ने

बालकों के लिये बनाया।

AN ELEMENTARY TEXT-BOOK

OF

MODERN HINDI GRAMMAR

BY

MADHAVA PRASAD PATHAK,

FORMERLY

Assistant Professor, Anglo-Sanskrit Department, Government Sanskrit College, Benares:

FOR THE USE OF BEGINNERS.

(Registered Under Act XXV of 1867.)

———:o:———

BENARES

Printed by Gauri Shanker Lal at C. P. Press

and

Published & sold by Messrs. Ganesa Das & Co., Chauk, Benares.

———

1911.

[All Rights Reserved.]

NOT TO BE LENT OUT

Rs. 5.00

SHELF LISTED

H
491.435
P 834

NATIONAL LIBRARY
No. 24886
Date 8.3.69
CALCUTTA-27

2.
17.5 Cm.

२ अंगूठे की जड़ की नाड़ी के एक बार चलने में जितना काल लगता है उतना ही काल जिस स्वर के उच्चारण करने में लगे वह ह्रस्व स्वर कहलाता है; जैसे, टहल।

३ ह्रस्व स्वर के उच्चारण करने में जितना काल लगता है उससे दूना काल जिस स्वर के उच्चारण करने में लगे वह दीर्घ स्वर कहलाता है ; जैसे, टहला।

४ ह्रस्व स्वर के उच्चारण करने में जितना काल लगता है उससे तिगुना काल जिस स्वर के उच्चारण करने में लगे वह प्लुत स्वर कहलाता है ; जैसे, टहलवा ३।

५ अ इ उ ऋ ऌ का ह्रस्व, आ ई ऊ ॠ ॡ ए ऐ ओ औ को दीर्घ और अ ३ इ ३ उ ३ ऋ ३ ऌ ३ ए ३ ऐ ३ ओ ३ औ ३ को प्लुत स्वर कहते हैं। प्लुतस्वर की पहिचान के लिये स्वर के आगे ३ का अङ्क लगाया जाता है॥

६ ह्रस्व स्वर को लघु व एकमात्रिक दीर्घ स्वर को गुरु व द्विमात्रिक और प्लुत स्वर को त्रिमात्रिक कहते हैं। हिन्दी में त्रिमात्रिक स्वर का काम दूर से पुकारने, चिल्लाने, रोने और गाने में पड़ता है।

७ जिस स्वर से परे संयुक्त व्यञ्जन रहे उसे भी गुरु कहते हैं। अ ए ओ की गुण और आ ऐ औ की वृद्धि संज्ञा है।

८ मात्रा—स्वर जब व्यञ्जन से मिलता है तब उसका रूप पलट जाता है ; उसी रूप को मात्रा कहते हैं। मात्रा का अर्थ परिमाण है। प्रत्येक स्वर के नीचे उसकी मात्रा लिखी जाती है—

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ
	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	ॄ	ॢ	ॣ	े	ै	ो	ौ

(अ) प्रत्येक व्यञ्जन में उच्चारण के समय ह्रस्व अ मिला रहता है ; जैसे, क में। अ रहित व्यञ्जनों के रूप क् च् ट् त् प्

इत्यादि ऐसे होते हैं। ह्रस्व अ की कोई मात्रा नहीं लिखी जाती और दीर्घ आ की (ा) यही मात्रा लिखने की चाल है।

☞ व्याकरण के आचार्य पाणिनि के मत से ऌ को दीर्घ नहीं होता बरन प्लुत होता है। ए ऐ ओ औ को ह्रस्व नहीं होते। कभी २ बोलचाल और कविता में ए और ओ को मात्रा के लाघवार्थ ह्रस्व पढ़ते हैं। हिन्दी में ऋ ॠ ऌ ॡ ङ ञ ण श क्ष ज्ञ का उपयोग नहीं है। जिन शब्दों में ये अक्षर मिले होते हैं वे प्रायः संस्कृत ही के होते हैं। इकारान्त, उकारान्त और ऋकारान्त हिन्दी शब्द भी प्रायः नहीं होते, जो मिलते हैं वे प्रायः संस्कृत शब्द हैं।

अयोगवाह वर्ण २

१ अनुस्वार और विसर्ग को अयोगवाह (अर्थात् स्वर और व्यञ्जन के मध्य में रहनेवाले) वर्ण कहते हैं। ये आश्रय-स्थानभागी कहलाते हैं क्योंकि जिस स्थान के वर्ण से परे ये आते हैं उसी स्थान के वर्ण ये भी कहाते हैं।

२ स्वर के शिर पर जो एक बिन्दु रहता है उसको अनुस्वार कहते हैं; जैसे 'अं' में।

३ हिन्दी में सानुनासिक की पहचान के लिये स्वर के शिर पर ऐसा ँ चिह्न लिखते हैं। इस ँ चिह्न को अर्द्धचन्द्र वा चन्द्रबिन्दु कहते हैं; जैसे, बाँस में। यह अनुस्वारही का रूप है। जहां अनुस्वार का आधा उच्चारण होता है वहां ही चन्द्रबिन्दु लिखते हैं।

४ सब स्वर (ह्रस्व दीर्घ व प्लुत) सानुनासिक और निरनुनासिक भेद से दो प्रकार के हैं। जो केवल मुख से बोले

॥ श्रीः ॥

अथ हिन्दीभाषाव्याकरणदीपिका

मुखबन्ध

१ व्याकरण एक विद्या है जिसको पढ़ कर लोग शुद्ध २ बोलना और लिखना सीखते हैं।

२ हिन्दी व्याकरण से हिन्दी भाषा के शुद्ध २ बोलने और लिखने का बोध होता है।

३ हम लोग बोल के वा लिख कर जिसके द्वारा अपने मन की बात वा भाव प्रकाश करते हैं उसे भाषा कहते हैं।

४ भाषा वाक्यों से, वाक्य पदों से, पद अक्षरों से बनते । इसलिये व्याकरण के तीन भाग हैं—वर्णविचार, शब्दचार और वाक्यविचार । अव्यय और विभक्ति सहित द 'पद' कहलाते हैं ॥

(अ) वर्णविचार में अक्षरों के आकार, नाम उच्चारण-स्थान, सन्धि इत्यादि का वर्णन है।

(इ) शब्दविचार में शब्दों के भेद, अवस्था, व्युत्पत्ति इत्यादि का वर्णन है।

(उ) वाक्यविचार में शब्दों से वाक्य कैसे बनते हैं इन प्रकारों का वर्णन है।

☞ वर्णविचार का अंश व्याकरण से सम्बन्ध नहीं रखता। परन्तु शब्द मात्र वर्णों से बनते हैं इसलिये शब्दों के मूल जो वर्ण हैं उनका वर्णन पाहिले लिखना उचित है॥

भाग १

पाठ १ । वर्णविचार

१ वर्ण वा अक्षर ध्वनिविशेष का चिह्न वा संकेत है । इसका खंड नहीं होता ।

२ वर्ण के यथाक्रम समुदाय को वर्णमाला कहते हैं ।

३ हिन्दीभाषा की वर्णमाला में ५२ अक्षर पढ़े जाते हैं । ये ४ भागों में बंटे हैं–स्वर, अयोगवाह, व्यञ्जन और संयुक्ताक्षर ।

४ स्वर वह वर्ण है जिसका उच्चारण बिना किसी अक्षर की सहायता के होता है ।

५ अयोगवाह वह वर्ण है जिसका उच्चारण विना स्वर की सहायता के नहीं हो सकता । वह स्वर से परे आता है ॥

६ व्यञ्जन वह वर्ण है जिसका उच्चारण विना स्वर की सहायता के नहीं हो सकता । वह स्वर से पूर्व व परे दोनों ओर आता है ।

७ जब दो वा दो से अधिक व्यञ्जनों के मध्य में स्वर न रहता तो वे संयोग पाते हैं और एक साथ मिला कर लि॰ जाते हैं । मिला हुआ अक्षर संयुक्ताक्षर कहाता है ॥

८ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ—ये १४ स्वर हैं ।

९ ं (अनुस्वार) ः (विसर्ग)—ये २ अयोगवाह वर्ण हैं ।

१० क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण । त थ द ध न । प फ ब भ म । य र ल व श ष स ह—ये ३३ व्यञ्जन हैं ।

११ क्ष त्र ज्ञ—ये ३ संयुक्ताक्षर हैं ।

पाठ २ । स्वर १

१ स्वर तीन प्रकार के हैं—ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत ।

जाते हैं वे निरनुनासिक होते हैं। जो मुख और नासिका दोनों से बोले जाते हैं वे सानुनासिक कहलाते हैं॥

५ स्वर के आगे जो दो बिन्दु रहते हैं उन दोनों को विसर्ग कहते हैं; जैसे 'अः' में।

६ विसर्ग के दो और भेद हैं—जिह्वामूलीय और उपध्मानीय। इनका उच्चारण आधे विसर्ग के उच्चारण के सदृश होता है। क और ख के पूर्व जिह्वामूलीय होता है; जैसे, क ≍करोति क ≍खनति। प और फ के पूर्व उपध्मानीय आता है; जैसे, क ≍पचति, क ≍फलति।

७ वर्णमाला में अनुस्वार और विसर्ग के लिखने की परिपाटी स्वरों ही के साथ है; कारण उसका केवल इसी बात को दिखलाने की है कि उनका उच्चारण स्वरही से परे होने का नियम है व्यञ्जन से नहीं।

व्यञ्जन ३

१ व्यञ्जन तीन भाग में बंटे हैं—स्पर्श, अन्तःस्थ और ऊष्म।

२ क ख ग घ ङ को कवर्ग; च छ ज झ ञ को चवर्ग; ट ठ ड ढ ण को टवर्ग; त थ द ध न को तवर्ग; और प फ ब भ म को पवर्ग, कहते हैं। इन्हीं पांचो वर्गों के २५ वर्णों को स्पर्श वर्ण कहते हैं।

(अ) इन पांचो वर्गों के प्रथम, तृतीय व पञ्चम वर्ण को अल्पप्राण और द्वितीय व चतुर्थ वर्ण को महाप्राण कहते हैं।

३ य र ल व को अन्तःस्थ वर्ण कहते हैं।

४ श ष स ह को ऊष्म वर्ण कहते हैं।

५ स्वर रहित व्यञ्जन को संस्कृत में हल् कहते हैं। हल्

लिखने की यह रीति है कि अक्षर के नीचे ऐसा ् चिह्न कर देते हैं; जैसे, क् च् ट् त् प् इत्यादि । इस ् चिह्न को विराम कहते हैं ।

६ व्यञ्जन में स्वर की मात्रा मिलाने से उसका रूप मात्रा सहित ऐसा होता है—

क का कि की कु कू कृ कॄ क्ऌ क्ॡ के कै को कौ कं कः ।

७ जब र के साथ उ ऊ की मात्रा मिलाई जाती है तब रु रू ऐसे रूप होते हैं । र को रेफ कहते हैं । रेफ जब किसी व्यञ्जन के नीचे लिखा जाता है तब वह उस व्यञ्जन के नीचे ्र इस रूप से मिला कर लिखा जाता है; जैसे 'ग्राम' में । जब रेफ किसी व्यञ्जन के ऊपर लिखा जाता है तब उसका रूप र्‍ ऐसा होता है; जैसे 'सर्प' में ।

८ ड और ढ के नीचे बिन्दी दे कर ड़ और ढ़ बनाते हैं; जैसे, बड़ा, बूढ़ा इत्यादि । क ख ग ज फ इन अक्षरों के नीचे फ़ारसी का शब्द ठीकर उच्चारण करने के लिये बिन्दी लगाते हैं; जैसे, मालूम, क़ौल, ख़बर, ग़म, ज़र, फ़रेब इत्यादि ॥

संयुक्ताक्षर ४

१ ऊपर कह आये हैं कि जब दो या दो से अधिक व्यञ्जन वर्णों के मध्य में स्वर नहीं रहता तब वे संयोग पाते हैं और एकही साथ मिला के लिखे जाते हैं; जैसे, त् स को त्स और त् स् य को त्स्य लिखते हैं ।

(अ) जब एकही तरह के अक्षर संयोग पाते हैं तब संयुक्ताक्षर के पूर्ववर्त्ती स्वर का दीर्घ उच्चारण होता है; जैसे, पत्ता, रस्सा इत्यादि ।

(इ) जब ख छ ठ थ फ का द्वित्व होता है तो पूर्ववर्त्ती ख

को क, छ का च, ठ को ट, थ को त, और फ को प आदेश होता है; जैसे, रक्खा, अच्छा, गट्ठा, पत्थर, पुष्फा इत्यादि।

(उ) जब भिन्न२ अक्षर संयोग पाते हैं तो संयुक्ताक्षर के पूर्ववर्त्ती स्वर का ह्रस्व उच्चारण होता है; जैसे, उन्हें, तुम्हारा इत्यादि। परन्तु कहीं २ उसका उच्चारण दीर्घ भी होता है; जैसे, विस्वा, सत्रह इत्यादि।

२ जब व्यञ्जनों का संयोग होता है तब अन्त के व्यञ्जन का पूरा और आदि के व्यञ्जन का आधा भाग लिखते हैं; जैसे 'ग्य' में। परन्तु ङ छ ट ठ ड ढ और ह ये व्यञ्जन संयोग के आदि में रहने पर भी पूरेही लिखे जाते हैं; जैसे 'भट्ठा' में।

३ प्रायः व्यञ्जनों का संयोग दो प्रकार से होता है—

(१) एक व्यञ्जन के ऊपर दूसरा व्यञ्जन लिख कर; जैसे, क्क, च्च इत्यादि।

(२) एक व्यञ्जन को दूसरे व्यञ्जन के पूर्व लिख कर; जैसे, द्द, त्थ इत्यादि।

४ कभी २ दो व्यञ्जनों का संयोग रूपान्तर हो जाता है; जैसे, क् ष के संयोग से 'क्ष', ज् ञ के योग से 'ज्ञ' और त् र के मेल से 'त्र'।

५ क्ष त्र ज्ञ को प्रायः वर्णमाला में लिखते हैं कारण कि इनकी मिलावट इनकी लिखावट में जान नहीं पड़ती। परन्तु जब 'त्र' को ऐसा 'त्र' लिखेंगे तो रूपान्तर न होगा॥

पाठ ३। अक्षरों के उच्चारणस्थान

१ अ आ क ख ग घ ङ ह और विसर्ग का उच्चारणस्थान कंठ है इससे ये कंठ्य कहलाते हैं।

२ इ ई च छ ज झ ञ य और श का उच्चारणस्थान तालु है इससे ये तालव्य कहलाते हैं।

३ ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र और ष का उच्चारणस्थान मूर्द्धा है इससे ये मूर्द्धन्य कहलाते हैं।

४ ऌ ॡ त थ द ध न ल और स का उच्चारणस्थान दन्त है इससे ये दन्त्य कहलाते हैं।

५ उ ऊ प फ ब भ म और उपध्मानीय का उच्चारणस्थान ओष्ठ है इससे ये औष्ठ्य कहलाते हैं।

६ ए ऐ के उच्चारणस्थान कंठ और तालु हैं इससे ये कंठ-तालव्य कहलाते हैं।

७ ओ औ के उच्चारणस्थान कंठ और ओष्ठ हैं इससे ये कंठौष्ठ्य कहलाते हैं।

८ व के उच्चारणस्थान दन्त और ओष्ठ हैं इससे यह दन्तौष्ठ्य कहलाता है।

९ अनुस्वार का (और ङ ञ ण न म का भी) उच्चारण-स्थान नासिका है इससे ये नासिक्य कहलाते हैं।

१० जिह्वामूलीय का उच्चारणस्थान जिह्वा का मूल है इससे यह जिह्वामूलीय कहलाता है।

पाठ ४। अक्षरों की सन्धि

१ जब दो अक्षर निकट रहने पर मिल जाते हैं तो उनके मेल से जो विकार होता है उसको सन्धि कहते हैं। 'सन्धि' का अर्थ है 'जोड़' अर्थात् दो स्वरों वा व्यञ्जनों का एक में जोड़ा जाना।

२ सन्धियां प्रायः तीन प्रकार की होती हैं—स्वरसन्धि, व्यञ्जनसन्धि और विसर्गसन्धि।

१ स्वरसन्धि

१ स्वर के साथ स्वर का मेल होने से जो विकार होता है

इसको स्वरसन्धि कहते हैं। इसके पांच भेद हैं—दीर्घ गुण, वृद्धि, यण् और अयादि ॥

दीर्घ।

१ जब दो समान स्वर ह्रस्व वा दीर्घ इकट्ठे हों तब दोनों मिल कर एक दीर्घ स्वर हो जाता है;—

अ + अ = आ; जैसे, राम + अनुज = रामानुज।

अ + आ = आ; जैसे, देव + आलय = देवालय।

आ + अ = आ; जैसे, विद्या + अर्थी = विद्यार्थी।

आ + आ = आ; जैसे, गदा + आघात = गदाघात।

इ + इ = ई; जैसे, कवि + इन्द्र = कवीन्द्र।

इ + ई = ई; जैसे, अहि + ईश = अहीश।

ई + इ = ई; जैसे, महती + इच्छा = महतीच्छा।

ई + ई = ई; जैसे, गौरी + ईश्वर = गौरीश्वर।

उ + उ = ऊ; जैसे, साधु + उपाय = साधूपाय।

उ + ऊ = ऊ; जैसे, गुरु + ऊह = गुरुह; लघु + ऊर्मि = लघूर्मि।

ऊ + उ = ऊ; जैसे, स्वयम्भु + उदय = स्वयम्भूदय।

ऊ + ऊ = ऊ; जैसे, भू + ऊर्ध्वम् = भूर्ध्वम्।

ऋ + ऋ = ॠ; जैसे; भ्रातृ + ऋद्धि = भ्रातॄद्धि।

गुण।

२ यदि अकार या आकार से परे इकार या ईकार हो तो दोनों मिल कर एकार, उकार या ऊकार हो तो ओकार और ऋकार हो तो अर् होता है और 'अर्' का रकार आगे वाले अक्षर के मस्तक पर चला जाता है। इस विकार को गुण कहते हैं; यथा—

अ + इ = ए; जैसे नर + इन्द्र = नरेन्द्र।

अ + ई = ए; जैसे, परम + ईश्वर = परमेश्वर।

आ + इ = ए; जैसे, राजा + इन्द्र = राजेन्द्र ।

आ + ई = ए; जैसे, महा + ईश = महेश ।

अ + उ = ओ; जैसे, भाग्य + उदय = भाग्योदय ।

अ + ऊ = ओ; जैसे, जल + ऊर्मि = जलोर्मि ।

आ + उ = ओ; जैसे, महा + उत्सव = महोत्सव ।

आ + ऊ = ओ, जैसे, गङ्गा + ऊर्मि = गङ्गोर्मि ।

अ + ऋ = अर्; जैसे, देव + ऋषि = देवर्षि ।

आ + ऋ = अर्; जैसे, महा + ऋषि = महर्षि ।

वृद्धि ।

३ यदि अकार या आकार से परे एकार या ऐकार हो तो दोनों मिल कर ऐकार और ओकार या औकार हो तो दोनों मिल कर औकार होता है। इस विकार को वृद्धि कहते हैं; यथा—

अ + ए = ऐ; जैसे, एक + एक = एकैक ।

अ + ऐ = ऐ; जैसे परम + ऐश्वर्य = परमैश्वर्य ।

आ + ए = ऐ; जैसे, तथा + एव = तथैव ।

आ + ऐ = ऐ; जैसे, महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य ।

अ + ओ = औ; जैसे सुन्दर + ओदन = सुन्दरौदन ।

अ + औ = औ; जैसे परम + औषध = परमौषध ।

आ + ओ = औ; जैसे, महा + ओषधि = महौषधि ।

आ + औ = औ; जैसे, महा + औदार्य = महौदार्य ।

यण् ।

४ यदि इ ई उ ऊ ऋ से परे इनसे भिन्न स्वर हों तो इ ई को य्, उ ऊ को व्, ऋ को र्, होता है। इसी विकार को यण् कहते हैं; यथा—

इ + अ = य; जैसे, यदि + अपि = यद्यपि ।

ई + अ = य; जैसे, गोपी + अर्थ = गोप्यर्थ ।
इ + आ = या; जैसे, इति + आदि = इत्यादि ।
ई + आ = या; जैसे, देवी + आगम = देव्यागम ।
इ + उ = यु; जैसे, प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर ।
ई + उ = यु; जैसे, सखी + उक्त = सख्युक्त ।
इ + ऊ = यू; जैसे, नि + ऊन = न्यून ।
इ + ए = ये; जैसे, प्रति + एक = प्रत्येक ।
इ + ऐ = यै; जैसे, अति + ऐश्वर्य = अत्यैश्वर्य ।
इ + ओ = यो; जैसे, अति + ओज = अत्योज ।
इ + औ = यौ; जैसे, अति + औदार्य = अत्यौदार्य ।
उ + अ = व; जैसे, अनु + अय = अन्वय ।
ऊ + अ = व; जैसे, सरयू + अम्बु = सरय्वम्बु ।
उ + आ = वा; जैसे, सु + आगत = स्वागत ।
उ + इ = वि; जैसे, अनु + इत = अन्वित ।
उ + ई = वी; जैसे, अनु + ईक्षित = अन्वीक्षित ।
उ + ए = वे; जैसे, अनु + एषण = अन्वेषण ।
उ + ऐ = वै; जैसे, बहु + ऐश्वर्य = बह्वैश्वर्य ।
उ + ओ = वो; जैसे, साधु + ओदन = साध्वोदन ।
उ + औ = वौ; जैसे, बहु + औदार्यम् = बह्वौदार्यम् ।
ऋ + अ = र; जैसे, पितृ + अनुमति = पित्रनुमति ।
ऋ + आ = रा; जैसे, मातृ + आनन्द = मात्रानन्द ।

अयादि ।

५ यदि ए ऐ ओ औ से परे भिन्न स्वर रहें तो ए को अय्, ऐ को आय्, ओ को अव्, औ को आव् होता है; अकार वा आकार पूर्व अक्षर से मिलता है और यकार वा वकार आगे वाले स्वर से मिलता है। इस विकार को अयादि कहते हैं; यथा—

ए + अ = अय; जैसे, ने + अन = नयन।

ऐ + अ = आय; जैसे, नै + अक = नायक।

ओ + अ = अव; जैसे, पो + अन = पवन।

ओ + ई = अवी; जैसे, गो + ईश = गवीश।

औ + अ = आव; जैसे, पौ + अक = पावक।

औ + इ = आवि; जैसे; भौ + इनी = भाविनी।

☞ यदि पदान्त एकार वा ओकार से परे अ रहे तो अकार का या तो लोप हो जाता है या वह ऽ अवग्रह के रूप में लिखा जाता है; जैसे, ते + अपि = तेपि वा तेऽपि; गो + अतीत = गोतीत वा गोऽतीत इत्यादि।

व्यञ्जनसन्धि

१ स्वर या व्यञ्जन के साथ व्यञ्जन का मेल होने से जो विकार होता है उसे व्यञ्जनसन्धि कहते हैं।

२ यदि क च ट त प से परे ग घ ज झ ड ढ ब भ य र ल व अथवा कोई स्वर रहे तो क को ग च को ज, ट को ड, त को द और प को ब आदेश होता है; जैसे, दिक् + गज = दिग्गज; दिक् + अम्बर = दिगम्बर; वाक् + जाल = वाग्जाल; वाक् + दत्त = वाग्दत्त; धिक् + याचना = धिग्याचना; अच् + आदि = अजादि; जगत् + ईश = जगदीश; षट् + आनन = षडानन; षट् + दर्शन = षड्दर्शन; अप् + ज = अब्ज।

३ यदि क च ट त प से परे कोई सानुनासिक अक्षर आये तो क को ङ्, च को ञ्, ट को ण्, त को न् और प को म् आदेश होता है; जैसे, प्राक् + मुख = प्राङ्मुख; षट् + मण्डप = षण्मण्डप और जगत् + नाथ = जगन्नाथ।

४ यदि त द के परे च छ हो तो त द को च और यदि

ट ठ हो तो त द को ट, होता है; जैसे, उत् + चारण=उच्चारण; तत् + टीका = तट्टीका इत्यादि ।

५ यदि त द के परे ज झ हो तो त द को ज और ड ढ हो तो त द को ड होता है; जैसे, उत् + ज्वल = उज्ज्वल; भवत् + डमरू=भवड्डमरू इत्यादि ।

६ यदि त द के परे श हो तो त द के स्थान में च और श के स्थान में छ होता है; जैसे, तत् + शब्द = तच्छब्द इत्यादि ।

७ यदि त द के परे ह हो तो त द के स्थान में द और ह के स्थान में ध होता है; जैसे, तत् + हित=तद्धित इत्यादि ।

८ यदि त द के परे ल हो तो त द के स्थान ल होता है; जैसे, उत् + लङ्घन = उल्लङ्घन इत्यादि ।

९ यदि त के परे ग घ ज झ द ध ब भ य र व अथवा कोई स्वर रहे तो त के स्थान में द होता है; जैसे, सत् + आचार=सदाचार; जगत् + ईश = जगदीश; सत् + वचन = सद्वचन इत्यादि ।

१० यदि अनुस्वार से परे कोई स्पर्श वर्ण हो तो जिस वर्ग का वह वर्ण हो उसी का पञ्चम वर्ण उसको आदेश होता है— कोई स्वर वर्ण हो तो उसको मकार होता है और कोई अन्तःस्थ और ऊष्म वर्ण हो तो उसको कुछ विकार नहीं होता; जैसे, टं + कार = टङ्कार; सं + भव = सम्भव; सं + यम=संयम; सं + हार = संहार; सं + आचार = समाचार इत्यादि ।

११ यदि ह्रस्व स्वर से परे छ हो तो छ के स्थान में च सहित छ होता है; यदि दीर्घ स्वर रहे तो विकल्प करके च सहित छ होता है; जैसे, गज + छाया = गजच्छाया; श्री + छाया = श्रीच्छाया, श्रीछाया इत्यादि ।

३ विसर्गसन्धि

१ स्वर या व्यञ्जन के साथ विसर्ग का मेल होने से जो विकार होता है उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

२ यदि विसर्ग से पूर्व इ उ हो और परे क ख ट ठ और प फ हो तो विसर्ग के स्थान में ष होता है; जैसे, निः + कपट = निष्कपट; दुःप्राप्य = दुष्प्राप्य; धनुः + टङ्कार = धनुष्टङ्कार इ०। विसर्ग से पूर्व अ आ हो और परे क हो तो कहीं विसर्ग को स होता है कहीं विसर्गही बना रहता है; जैसे, पुरः + कार = पुरस्कार; भाः + कर = भास्कर; अन्तः + करण = अन्तःकरण इ०।

३ यदि विसर्ग के पूर्व ह्रस्व 'अ' हो और उससे परे ग घ ङ ज झ ञ ड ढ ण द ध न ब भ म य र ल व ह हो तो विसर्ग और पूर्वस्थित 'अ' दोनों को 'ओ' आदेश होता है। यदि अकार परे हो तो वह इस रूप में ऽ लिखा जाता है; जैसे; तेजः + मय = तेजोमय; मनः + अवधान = मनोऽवधान इ०।

४ यदि विसर्ग से परे च छ हो तो विसर्ग को श त थ हो तो स और ट ठ हो तो ष आदेश होता है; जैसे, निःचल = निश्चल; निः + तार = निस्तार; धनुः + टङ्कार = धनुष्टङ्कार इ०।

५ यदि विसर्ग के पूर्व अ आ को छोड़ कोई दूसरा स्वर हो और उससे परे ग घ ङ ज झ ञ ड ढ ण द ध न ब भ म य र ल व ह हो तो विसर्ग को 'र्' आदेश होता है; जैसे, निः + अर्थ = निरर्थ; निः + इच्छा = निरिच्छा; निः + गुण = निर्गुण; बहिः + मुख = बहिर्मुख इत्यादि।

६ यदि विसर्ग के पूर्व आ को छोड़ अ इ उ स्वर हो और उसके आगे 'र' हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और पूर्व स्वर को दीर्घ होता है; जैसे, पुनः + रमते = पुनारमते, निः + रोग = नीरोग, शम्भुः + राजते = शम्भूराजते इत्यादि।

भाग २

पाठ १। शब्दविचार

जो कान से सुनाई देता है उसको शब्द कहते हैं। (परन्तु यहां पर) अक्षरों के उस समुदाय को शब्द कहते हैं जिससे कुछ अर्थ का बोध होता है।

२ शब्द दो प्रकार के हैं—व्यक्त वा सार्थक और अव्यक्त वा निरर्थक।

३ जिस शब्द से कुछ अर्थ का बोध होता है उसको व्यक्त वा सार्थक कहते हैं; जैसे, मनुष्य की बोली के शब्द।

४ जिस शब्द से कुछ भी अर्थ का बोध नहीं होता उसको अव्यक्त वा निरर्थक कहते हैं; जैसे, पशु आदि की बोली के शब्द।

५ सार्थक शब्द तीन प्रकार के हैं—संज्ञा, क्रिया और अव्यय।

६ गुणवाचक और सर्वनाम भी संज्ञा हैं कारण कि इनका रूपसाधन उसी प्रकार होता है जैसे स्वतन्त्र संज्ञा का। गुणवाचक संज्ञा अकेले नहीं आती किन्तु विशेषण हो के किसी विशेष्य के साथ आती है; जैसे, मीठा (पानी), खट्टा (नीबू) इत्यादि।

७ अव्यय पांच प्रकार के हैं।—क्रियाविशेषण, सम्बन्धबोधक, संयोजक, विभाजक और विस्मयादिबोधक।

८ सारांश यह हुआ कि शब्दों का भेद सिखलाने का अति सुगम प्रकार यही होगा कि उनका ९ विभाग किया जाय; यथा, १ संज्ञा (विशेष्य), २ सर्वनाम (संज्ञाप्रतिनिधि), ३ गुणवाचक (विशेषण), ४ क्रिया (आख्यात), ५ क्रियाविशेषण, ६ सम्बन्धबोधक, ७ संयोजक, ८ विभाजक और ९ विस्मयादिबोधक।

पाठ २ । संज्ञा (विशेष्य) ।

(अ) मनुष्य, बालिका, मित्र, गोपाल, राधिका,—ये पुरुषों के नाम हैं । इन नामों को संज्ञा कहते हैं ।

(इ) कुत्ता, बिल्ली, गाय, घोड़ा, सिंह, मोर, कबूतर, बटेर-ये पशुओं और पक्षियों के नाम हैं। इन नामों को संज्ञा कहते हैं।

(उ) चुनार, दिल्ली, गली, मन्दिर, घर—ये स्थानों के नाम हैं । इन नामों को संज्ञा कहते हैं ।

(ऋ) कुर्सी, सन्दूक, पेड़, लोटा, थाली—ये वस्तुओं के नाम हैं । इन नामों को संज्ञा कहते हैं ।

किसी के नाम को संज्ञा कहते हैं चाहे नाम पुरुष का हो, पशु वा पक्षी का हो, स्थान का हो, अथवा वस्तु का हो; जैसे, मोहन, बालक, भेड़िया, बुलबुल, हरिद्वार, नगर, पुस्तक इत्यादि ।

उदाहरण । नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञाओं को बतलाओ—गोपाल को बोलाओ । बांकीपुर न जाओ । फूल मत तोड़ो । गुरू का आदर करो । कोठरी में सांप है । बकरी घास चरती है । माली ने उस पेड़ से फूल तोड़ा । लड़की गुड़ियों को संवारती है । रोटी पका के खाओ । मोहन पहाड़ पर चढ़ गया । नदी में पुल बँधा है । कपड़े की रँगाई अच्छी नहीं हुई । रोहन ने आलमारी में किताबें रख दीं । नारङ्गी न छूओ । कूँए में गाय गिर पड़ी । खिड़की मत खोलो । लड़के गोली खेलते है । सोहन काशीपुर चला गया । उसका भाई कल लौटेगा । किस बाज़ार में अनाज अच्छे भाव बिकता है ।

पाठ ३ । सर्वनाम (संज्ञाप्रतिनिधि)

(अ) गोपाल बोला कि मैं आया — यहां बोलनेवाले 'गोपाल' ने अपना नाम न दोहरा कर अपने नाम के स्थान में 'मैं' कहा।

(इ) मोहन तुम आ गये—यहां 'मोहन' का, जिससे बात हुई, नाम न दोहरा कर उसके स्थान में 'तुम' कहा।

(उ) सोहन अच्छा पढ़ता है वह कल आवेगा—यहां 'सोहन' का नाम न दोहरा कर उसके स्थान में 'वह' कहा।

ऊपर के तीनों वाक्यों में 'मैं, तुम, वह' ये शब्द संज्ञाप्रतिनिधि वा सर्वनाम कहाते हैं। ये संज्ञाओं के स्थान में इसलिये आये हैं जिसमें दोहरा कर उन संज्ञाओं का पुनः प्रयोग न किया जाय।

(ऋ) गाय खेत में चरने गई, उसका बछवा कहां है—यहां 'गाय' संज्ञा को दोहरा के न लिख कर (जैसे, गाय खेत में चरने गई, गाय का बछवा कहां है) उसके स्थान में 'उसका' इस शब्द का प्रयोग किया गया।

पेड़ गिर पड़ा, उसके पत्ते सूख गये—यहां 'पेड़' संज्ञा को दोहरा के न लिख कर (जैसे, पेड़ गिर पड़ा, पेड़ के पत्ते सूख गये) उसके स्थान में 'उसके' इस शब्द का प्रयोग किया गया।

ऊपर के दोनों वाक्यों में 'उसका' और 'उसके' ये भी सर्वनाम हैं क्योंकि ये संज्ञाओं के स्थान में इसलिये आये है जिसमें संज्ञाओं को दोहरा कर न लिखना पड़े।

जिस शब्द का प्रयोग संज्ञा के स्थान में वा बदले किया जाता है उसको संज्ञाप्रतिनिधि वा सर्वनाम कहते हैं; जैसे, 'गोपाल' थक गया था इसलिये 'वह' बैठ गया।

☞ मैं, हम, तू, तुम, वह, वे, मेरा, मेरी, हमारा, हमारी, तेरा, तेरी, तुम्हारा, तुम्हारी, उसका, उसकी, मुझको, हमको, तुझको, तुमको, उसको, उनको, जो, जौन, जिसका, जिनका, जिसको, जिनको, को, कौन, किसको, किनको इत्यादि सर्वनाम हैं।

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञाओं और सर्वनामों को बतलाओ- वह पेड़ जड़ से उखड़ गया। वह नारङ्गी है। तुम तालाब में नहाते थे। तुम्हारी घड़ी कहां है। मेरे घोड़ों को घास चाहिये। उनकी सन्दूक क्या हुई। तू तो मूर्ख है। वे अच्छा पढ़ते हैं। मनुष्य आ गये उनको खिलाओ। गाय प्यासी है उसको पानी दो। मैं कल गांव चला जाऊंगा। हम परसों आये थे। तुम गाना नहीं जानते। मुझको झूठे लड़के अच्छे नहीं जान पड़ते। तुमको कौन मनुष्य जानता है। मेरा नाम नहीं है। तेरा शिर फूट गया। जो पुस्तकें तुम्हारी थैली में थे वे उन्हीं की हैं। ('पुस्तक' को स्त्रीलिङ्ग भी बोलते हैं)।

नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञाओं के स्थान में सर्वनाम रक्खो—मोहन ने मोहन की कुर्सी सोहन को दी। हरिदास ने कहा कि रामदास ने हरिदास को मारा। बिल्ली चूहे पर झपटी, चूहे बिल्ली को देख के बिल में घुस गये। सखाराम रोता था क्योंकि सखाराम की टोपी खो गई थी। गोपाल गोपाल की पुस्तक पढ़ता था। उसने मोहन को बोलाया मोहन खेत में था।

पाठ ४। गुणवाचक (विशेषण)

बड़ा (आम)—अच्छा (लड़का)—बलवान (मनुष्य)—काला (कपड़ा)—हलका (बोझ)। बड़ा, अच्छा, बलवान, काला, हलका इन शब्दों को गुणवाचक कहते हैं। इनसे यह जाना जाता है कि किस प्रकार का आम, लड़का, मनुष्य, कपड़ा, बोझ है।

जिस शब्द से संज्ञा का प्रकार वा गुण जाना जाता है उसको गुणवाचक कहते हैं; जैसे, छोटा, कसैला, दयालु, भड़कीला इत्यादि।

उदाहरण । (१) नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञाओं, सर्वनामों और गुणवाचकों को बतलाओ—उसको एक मोटी बिल्ली देख पड़ी । वह दुर्बल बालक उसकी माता के साथ आया था । वे उस भारी पत्थर को उठा लाये । हम सफ़ेद काग़ज पर लिखते हैं । वह फीकी सियाही से लिखता है। मेरे छोटे २ बच्चे खेल रहे हैं। मैं ने एक काला सांप जमीन पर रेंगते देखा । उसने बड़े २ पेड़ लगाये । उनकी कुर्सियां खाली हैं आप लोग उन पर बैठ जाइये । जिनके कपड़े फटे हों वे उतार डालें । आप मैले लड़कों के पास न बैठें । वह उस ऊंची दीवार पर चढ़ गया । उसके पास एक छोटा टट्टू है । अब आप को कच्चे आम नहीं मिलेंगे । जिसका घर खाली हो वही आवे । तुम मीठा पानी नहीं लाये ।

(२) नीचे लिखी हुई संज्ञाओं के पूर्व विशेषण लगाओ—

—पेड़,—नदी,—घर,—दूध,—शेर,—फूल,—पानी,—कपड़े,—गली,—चाकू,—फूल,—दिन ।

(३) नीचे लिखे हुये विशेषणों के आगे संज्ञा लगाओ—

कड़ा—, पतला—, मोटा—, सुन्दर—, बड़ा—, दुःखदाई—, कड़ुआ—, शूर—, बुद्धिमान—, चतुर—, मैला—, पक्का— ।

पाठ ५ । क्रिया (आख्यात)

(अ) लड़का अपने भाई को मारता है। विद्यार्थी पुस्तक पढ़ता है। 'मारता है' 'पढ़ता है' इनको क्रिया कहते हैं। ये किसी काम का करना जताते हैं।

(इ) कुत्ता भूंकता है । बिल्ली दौड़ती है । 'भूंकता है' 'दौड़ती है' ये भी क्रिया हैं। इनसे भी किसी काम का करना जाना जाता है।

(उ) बालक मूर्ख है—नीबू खट्टा होता है—'है' 'होता है' ये भी क्रिया हैं। इनसे किसी काम का होना जाना जाता है।

जिस पद से किसी काम का करना या होना जाना जाता है उसको क्रिया कहते हैं; जैसे, सोहन हँसता है, घोड़ा घास खाता है, पृथिवी गोल है, बांस लंबा होता है।

उदाहरण। (१) नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञाओं, सर्वनामों, गुणवाचकों और क्रियाओं को बतलाओ—सितारे चमकते हैं। पक्षी उड़ते हैं। रोहन अपनी बकरियां बेचता है। तुम मीठे फल खाते हो। उनके बेटे नई किताब बेंचते हैं। थवई घर बनाता है। वह स्त्री उसकी दासी को बोलाती है। उसे क्यों जगाते हो। वह नया घर किस मनुष्य ने बनाया है। मेरा छोटा लड़का तीन दिन से घर नहीं आता। वह मोटी बिल्ली चूहे को नहीं पकड़ सकती। उसका छोटा बच्चा प्रतिदिन रोया करता है। उनके छोटे २ बच्चे तालाब के किनारे खेला करते हैं। जो चीज़ तुम खाते हो उसका नाम लो।

(२) नीचे लिखी क्रियाओं के मेल से वाक्य बनाओ—लिखता है, रोता था, खेलो, बैठेगा, पुकारो, सो रहा है, बैठो, पीता था, गिरा, उठ बैठा, गया, जा रहा है।

(३) नीचे लिखी हुई संज्ञाओं में क्रिया लगाओ—

कुत्ता—, लड़का—, मक्खी—, गरमी—, सन्दूक—, चिड़िया—, घर—, पाठ—, आम—, पहिया—.

पाठ ६। क्रियाविशेषण

घोड़ा (शीघ्र) दौड़ता है—वह चतुर लड़का (अभी) आया—लड़की (ज़ोर से) पढ़ती है। (शीघ्र, अभी, ज़ोर से) इनको क्रियाविशेषण कहते हैं क्योंकि इन शब्दों के योग से (दौड़ता है, आया, पढ़ती है) इन क्रियाओं में कुछ विशेषता पाई जाती है।

जिस शब्द के प्रयोग से क्रिया में कुछ विशेषता पाई

24886 8.3.69

जाय उसको क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे, वह लड़का (धीरे २) पढ़ता है इत्यादि।

☞ गुणवाचकों और क्रियाविशेषणों के पूर्व ऐसे विशेषणों का प्रयोग होने से उनके अर्थ में भी विशेषता आ जाती है; जैसे, वह (बड़ा) चतुर लड़का है—लड़की (बहुत जोर से) पढ़ती है—'बड़ा' यह 'चतुर' शब्द और 'बहुत' यह 'जोर से' शब्द के अर्थ में कुछ विशेषता कर देता है इसलिये ऐसे शब्द जो क्रियाओं के विशेषण होते हैं वे गुणवाचकों और क्रियाविशेषणों के भी विशेषण कहे जाते हैं।

उदाहरण। (१) नीचे लिखे वाक्यों में क्रियाविशेषणों को बतलाओ—लड़का तुरन्त आया। दयालु मनुष्य सदा दया करता है। वह अति समीप रहता है। वे बड़े दुष्ट हैं। कौनसा घोड़ा बहुत सुन्दर है। वह बड़े प्रेम से पूजा करता है। सोहन देर करके घर पहुंचा। गोपाल झट खड़ा हो गया। तुम कल चले आना। वह यहां से छोड़ गया। वह बहुत बका। वह फल बिलकुल कच्चा है। वे आम बहुत मीठे हैं। अपना काम शीघ्र पूरा करो। उन लड़कों से कहो कि वे यहां फिर न आवें।

(२) ऐसे छ वाक्य बनाओ जिनमें क्रियाविशेषण क्रिया का गुण बतलाता हो।

(३) ऐसे छ वाक्य बनाओ जिनमें क्रियाविशेषण विशेषण का गुण बतलाता हो।

(४) ऐसे छ वाक्य बनाओ जिनमें एक क्रियाविशेषण दूसरे क्रियाविशेषण का गुण बतलाता हो।

पाठ ७। सम्बन्धबोधक

पुस्तक मेज़ (पर) है। गाय खेत (में) चरती है। 'पर' और 'में' ये सम्बन्धबोधक अव्यय हैं क्योंकि 'पर' पुस्तक का सम्बन्ध मेज़ से और 'में' गाय का सम्बन्ध खेत से बतलाते हैं।

जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध वाक्य में दूसरी संज्ञा या सर्वनाम से जाना जाता है उसको सम्बन्ध-बोधक अव्यय कहते हैं ; जैसे, वह बालक दीवार पर है इत्यादि ।

उदाहरण (१) नीचे लिखे वाक्यों में सम्बन्धबोधक अव्ययों को बतलाओ—गाय खेत में चरती है । सांप ज़मीन पर रेंग रहा है । बनारस से मिर्ज़ापूर २० कोस है । वह आदमी मन्दिर की ओर गया । गोपाल के पास जाओ । वह तुम्हारे समीप रहता है । तुम किसके साथ रहते हो । वह कलकत्ते से लौट आया । ज़मीन पर रख दो । चार दिन के लिये घर चले जाओ । घंटा बजने के पीछे वह आया । आप की कृपा के बिना वह नहीं बच सकता । आले से पुस्तक उतारो । भला उसके घर तक तो जाओ। मेरी ओर दृष्टि करो ।

(२) नीचे लिखे वाक्यों में रेखाओं के स्थान में ठीक २ सम्बन्ध-बोधक अव्यय रक्खो—

सब—कृपा करो । दीन दुःखियों—सवाल पूरा करो। वह घर—बाहर निकला । मेरा गांव यहां—चार कोस है । वह कूएँ—जगत—खड़ा था । दूसरों—भरोसा मत करो परन्तु अपनी भुजाबल—विश्वास करो । पहाड़—चढ़—जाओ । सोहन दरख़्त—चढ़ गया परन्तु एक शाखा के टूट जाने—ज़मीन—गिर पड़ा ।

पाठ ८ । संयोजक

वह (और) मैं आया ।(यदि) वह पढ़ता तो ख़राब न होता । 'और' व 'यदि' संयोजक अव्यय हैं क्योंकि 'और' शब्द 'वह' और 'मैं' को और 'यदि' शब्द 'वह पढ़ता' और 'ख़राब न होता' को जोड़ते हैं ।

जो शब्द पदों और वाक्यों को जोड़ते हैं वे संयोजक अव्यय कहलाते हैं ; जैसे, कुत्ता तो चलाही गया और बिल्ली भी नहीं देख पड़ती।

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों में संयोजक अव्ययों को बतलाओ– लड़के और लड़कियां चली गई। वह खड़ा हुआ फिर बैठ गया। वह लज्जित है क्योंकि उससे भूल हो गई। वह जागता है अब तुम सो सकते हो। तो ऐसाही करने को मोहन ने भी कहा है। गाय का हो चाहे बकरी का मुझको दूध चाहिये। उससे कह दो कि वह चला जाय। आज कल दिन बड़ा होता है क्योंकि गरमी की ऋतु है। (संस्कृत में 'ऋतु' शब्द पुंलिङ्ग है पर हिन्दी में स्त्रीलिङ्ग लिखने की चाल है)।

पाठ ९। विभाजक

सोहन आया परन्तु रोहन चला गया। 'परन्तु' यह विभाजक अव्यय कहलाता है क्योंकि यह शब्द 'सोहन आया' इस वाक्य को 'रोहन चला गया' इस वाक्य से पृथक् करता है।

जो शब्द पदों और वाक्यों का विभाग बोधित करते हैं वे विभाजक अव्यय कहलाते हैं; जैसे, यद्यपि वह मूर्ख है तथापि समझ के बोलता है।

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों में विभाजक अव्ययों को बतलाओ– कुत्ता दौड़ा परन्तु बिल्ली को न पा सका। वह या मैं आ सकता हूं। यदि भूख हो तो खा लो। न इसे छूओ न उसे। यद्यपि आम पक गया तथापि खट्टा है। चाहे जाओ अथवा बैठो। जब कल्लू बैठ गया तब हन्नू चुप हो गया। ज्योंही वह बैठा त्योंही उसकी बोलाहट फिर हुई।

पाठ १०। विस्मयादिबोधक

(छी) मत छूओ–(वाहरे) तुम्हारा प्रारब्ध। 'छी' और 'वाहरे' इनको विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं क्योंकि इन शब्दों से चित्त का उद्गार जाना जाता है।

जिस शब्द से अन्तःकरण का उद्गार प्रकाशित हो उसको विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं ; जैसे, जय २ महाराज इत्यादि ।

उदाहरण । नीचे लिखे वाक्यों में विस्मयादिबोधक अव्ययों को बतलाओ —बाप रे बाप बड़ी चोट लगी । हे ईश्वर त्राहि २ । वाह २ अच्छा हुआ । धिक् यह तुम ने क्या किया । धन्य २ कृपानिधान । छी २ हट जाओ । आह अब नहीं सहा जाता । ओह हो कैसा आया । चुप चुप गुरु जी आते हैं । अरे वह भागा । अजी जरा सुनो तो ।

पाठ ११ । सरल 'शब्दभंजन' विधि ।

किसी वाक्य के प्रत्येक शब्द का भेद कहना अथवा ऊपर कहे हुए ९ प्रकार के शब्दों में से वह किस प्रकार का शब्द है यह बतलाना सरल शब्दभंजन कहलाता है ।

१ अजी यदि लड़के ने अपना पाठ नहीं सुनाया तो उसको ज़मीन पर खड़ा रक्खो ।

अजी—विस्मयादिबोधक अव्यय	ने—विभक्ति
यदि—विभाजक अव्यय	अपना—सर्वनाम
लड़के—संज्ञा	पाठ—संज्ञा
नहीं—क्रियाविशेषण	ज़मीन—संज्ञा
सुनाया—क्रिया	पर—सम्बन्धबोधक अव्यय
तो—विभाजक अव्यय	खड़ा रक्खो—क्रिया
उसको—सर्वनाम	

उदहरण । नीचे लिखे वाक्यों में प्रत्येक शब्द का भेद बतलाओ—हमको आज वहां जाना है । तुम मकान पर कब रहोगे । मेरे लड़के बहुत बीमार थे । छी तुमने बड़ा ख़राब काम किया । देवदत्त से कहो कि वह ऐसा काम न करे । रामराम तुम नहीं समझते कि कैसी गर्मी पड़ रही है ।

भाग १अ

पाठ १ । संज्ञा

(अ) यज्ञदत्त, काशी, यमुना । यज्ञदत्त, काशी और यमुना ये व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं क्योंकि 'यज्ञदत्त' एक विशेष व्यक्ति का नाम है, 'काशी' एक विशेष नगर का नाम है और 'यमुना' एक विशेष नदी का नाम है ।

(इ) बालक, घोड़ा, नदी । बालक, घोड़ा, नदी ये जाति-वाचक संज्ञा हैं क्योंकि 'बालक' वह नाम है जिसमें पुंजाति के सब बच्चे पुकारे जाते हैं ; 'घोड़ा' वह नाम है जिसमें घोड़े मात्र पुकारे जाते हैं ; 'नदी' वह नाम है जिसमें समस्त जल के प्रवाह पुकारे जाते हैं ।

(उ) तिताई, मारपीट । तिताई मारपीट ये भाववाचक संज्ञा हैं क्योंकि तीता होने का गुण तिताई से जाना जाता है; मारने पीटने का धर्म मारपीट से जाना जाता है ।

१ इन उदाहरणों से यह ज्ञान हुआ कि अर्थ भेद से 'संज्ञा' तीन प्रकार की होती है-व्यक्तिवाचक, जातिवाचक और भाववाचक ।

(१) व्यक्तिवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिसके अर्थ से एक व्यक्ति का बोध हो ; जैसे, मोहन, गंगा इत्यादि ।

(२) जातिवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिसके अर्थ से जातिमात्र का बोध हो ; जैसे, मनुष्य, गाय इत्यादि ।

(३) भाववाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिसके अर्थ से किसी गुण, धर्म वा व्यापार का बोध हो; जैसे, ऊँचाई, लेनदेन, दौड़धूप इत्यादि।

२ स्वरूप भेद से भी 'संज्ञा' तीन प्रकार की होती है--रूढ़ि, यौगिक और योगरूढ़ि।

(१) रूढ़ि संज्ञा उसे कहते हैं जो किसी के योग से न बनी हो अथवा जिसके खंडों का अर्थ न हो; जैसे, मनुष्य, घोड़ा, गज, हड्डी, गुठली इत्यादि।

(२) यौगिक संज्ञा उसे कहते हैं जो पदों के योग से बनी हो अथवा जिसके खण्डों के अर्थ का सम्बन्ध हो; जैसे, जन्मभूमि, चौखूंटा, घोड़चढ़ा, पनभरा इत्यादि।

(३) योगरूढ़ि संज्ञा उसे कहते हैं जो स्वरूप में यौगिक संज्ञा के समान देख पड़े परन्तु जिनके योग से वह बनी हो उनके अर्थों के अतिरिक्त किसी विशेष अर्थ को प्रकाश करे; जैसे, अंगरखा-यह शब्द 'अंग' और 'रखा' इन शब्दों के योग से बना है; उससे शरीर की रक्षा करनेवाले अनेक कपड़ों में से एक प्रकार का वस्त्र विशेष समझा जाता है। इसी प्रकार 'लम्बोदर' से गणेश और 'पङ्कज' से कमल समझा जाता है।

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञाओं को उनके भेद सहित बतलाओ—प्रयाग को तीर्थराज कहते हैं। मिर्ज़ापुर भी गंगातट पर है। उसका बोलना भला जान पड़ता है। खेलकूद दौड़धूप से लड़के पुष्ट होते हैं। कुत्ता भूँकता है। पहाड़ ऊंचा होता है। हँसने से हानि होती है। फूलों से लदा वृक्ष देख के चित्त प्रसन्न होता है। नल से पानी बहता है। उसका बोलचाल तो अच्छा है परन्तु आचरण ठीक नहीं। कापुरुष के लक्षण कहो।

☞ संज्ञा में लिङ्ग, वचन और कारक होते हैं।

(अ) लिङ्ग से बोध होता है कि संज्ञा का वाच्य पुरुष है वा स्त्री।

(इ) वचन से बोध होता है कि संज्ञा का वाच्य एक है वा एक से अधिक।

(उ) कारक से पदों की पृथक् २ अवस्था वा स्थिति जानी जाती है।

पाठ २। लिङ्ग

१ लड़का, लड़की, घोड़ा, घोड़ी। लड़का, घोड़ा ये पुरुषवाचक हैं इसलिये ये पुंलिङ्ग हैं। लड़की, घोड़ी ये स्त्रीवाचक हैं इसलिये ये स्त्रीलिङ्ग हैं॥

२ इन उदाहरणों से यह जाना जाता है कि लिङ्ग दो हैं—पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग पुरुषवाचकों से पुंलिङ्ग और स्त्रीवाचकों से स्त्रीलिङ्ग का बोध होता है।

३ संस्कृत में नपुंसकलिङ्ग होता है वह हिन्दी में नहीं होता। प्रायः संस्कृत के नपुंसकलिङ्ग शब्द हिन्दी में पुंलिङ्ग होते हैं।

४ जिन शब्दों के अर्थ से जोड़े का ज्ञान होता है उनके लिङ्ग जानने में कुछ कठिनता नहीं होती ; जैसे, लड़का, लड़की ; घोड़ा, घोड़ी ; पति, पत्नी इत्यादि। जिन शब्दों से जोड़े का ज्ञान नहीं होता उनके लिङ्ग के जानने की यह रीति है कि हिन्दी ईकारान्त, सकारान्त और तकारान्त शब्द (जैसे बत्ती, कड़ी, प्यास, हुलास, रात, बात इत्यादि) प्रायः स्त्रीलिङ्ग होते हैं और शेष प्रायः पुंलिङ्ग ही होते हैं।

५ लिङ्गज्ञान के लिये कुछ नियम नीचे लिखे जाते हैं—

(१) अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द के अन्त्य 'अ' को स्त्रीलिङ्ग में कहीं 'ई' कहीं 'इन' कहीं 'आनी' और कहीं 'इका' आदेश होता है और कहीं उसके आगे 'नी' जोड़ दिया जाता है; जैसे—

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
ब्राह्मण	ब्राह्मणी	कोंहार	कोंहारिन, कोंहाइन
सोनार	सोनारिन	लोहार	लोहारिन, लोहाइन
चमार	चमारिन, चमाइन, चमारी	भाट	भाटिन, भाटनी
		मोर	मोरनी
अहीर	अहीरिन, अहिरिन, अहीरी	जेठ	जेठानी
		चाण्डाल	चाण्डालिन, चाण्डाली
नट	नटिन, नटी	बालक	बालिका
सिंह	सिंहिन, सिंहनी	कुमार	कुमारिका

(२) आकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के अन्त्य 'आ' को स्त्रीलिङ्ग में कहीं 'ई' कहीं 'इया' कहीं 'अ' और कहीं 'इन' आदेश होता है; जैसे—

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
भैंसा	भैंस	लहेरा	लहेरिन, लहेरन
लड़का	लड़की	घोड़ा	घोड़िया
साला	साली, सरहज	बूढ़ा	बुढ़िया
कमेरा	कमेरिन	कुत्ता	कुतिया, कुत्ती

परन्तु बछवा को बछिया और चकवा को चकई होता है।

(३) ईकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के अन्त्य 'ई' को स्त्रीलिङ्ग में कहीं 'इन' और कहीं 'इनी' आदेश होता है; जैसे—

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
तमोली	तमोलिन	नाई	नाइन
धोबी	धोबिन, धोबन	हाथी	हथिनी
हलुआई	हलुआइन	*खत्री	खत्रानी

(४) पदवीवाचक पुंलिङ्ग शब्दों के अन्त्य स्वर को स्त्रीलिङ्ग में 'आइन' आदेश होता है और यदि आदि अक्षर में आकार हो तो उसका अकार हो जाता है; जैसे—

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
सुकुल	सुकुलाइन	सेठ	सेठाइन, सेठानी
पाठक	पठकाइन	राउत	रउताइन, रउतानी
तिवारी	तिवराइन	ठाकुर	ठकुराइन, ठकुरानी
चौबे	चौबाइन	लाला	ललाइन
पांड़े	पँड़ाइन	बाबू	बबुआइन
पण्डित	पण्डिताइन, पण्डितानी	साधू	सधुआइन

(५) बहुत से पुंलिङ्ग शब्दों के स्त्रीलिङ्ग दूसरे शब्द होते हैं; जैसे—

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
राजा	रानी	बाप	मा, महतारी
पति	पत्नी	पुत्र	कन्या
पिता	माता	नर	मादा
पुरुष	स्त्री	लाल	मदिया
भाई	भौजाई, बहिन	बैल	गाय

(६) बहुत से पुंलिङ्ग शब्द स्त्रीलिङ्ग शब्दों से बनते हैं; जैसे—

---

* खत्री और क्षत्री के रूप स्त्रीलिङ्ग में साधारण नियम के विरुद्ध खत्रानी और क्षत्रानी होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग
सास	ससुर	बहन	बहनोई
ननद	ननदोई	धी	जमाई

उदाहरण। नीचे लिखे शब्दों का लिङ्ग बतलाओ और यदि शब्द पुंलिङ्ग हो तो उसका स्त्रीलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग हो तो उसका पुंलिङ्ग भी कहो— चौधराइन, ओझा, दुबाइन, उपाध्या, बनिया, धोबी, मित्र, ऊंट, घर, दूकान, स्नान, बच्चा, कूंचा, परिन्द, माल, घास, कुंजड़ा, उपहास, मिठास, सांप, बेटी, बरछी, इन्द्रानी, शत्रु, माल, नदी, पंडाइन, बुड्ढो इत्यादि।

पाठ ३। वचन

१ नदी, नदियां। 'नदी' कहने से एक नदी का बोध होता है इसलिये 'नदी' संज्ञा एकवचन की है। 'नदियां' कहने से एक से अधिक का बोध होता है इसलिये 'नदियां' संज्ञा बहुवचन की है।

२ इन उदाहरणों से यह जाना जाता है कि वचन दो हैं— एकवचन, बहुवचन। 'एकवचन' का प्रयोग एक के लिये किया जाता है; जैसे, लड़का, घोड़ा, इत्यादि। 'बहुवचन' का प्रयोग एक से अधिक के लिये किया जाता है; जैसे, लड़के, घोड़े इ०।

३ एकवचनान्त को बहुवचनान्त बनाने के साधारण नियम—

(अ) अकारान्त शब्द यदि पुंलिङ्ग हो तो वह दोनों वचनों में समान होता है; जैसे, बालक आया, बालक आये इत्यादि— यदि स्त्रीलिङ्ग हो तो बहुवचन बनाने में अन्त्य 'अ' को 'एं' आदेश होता है; जैसे, भैंस, भैंसे; गाय, गायें इत्यादि।

(इ) आकारान्त शब्द यदि पुंलिङ्ग हो तो बहुवचन में अन्त्य 'आ' को 'ए' आदेश होता है; जैसे, लड़का, लड़के; घोड़ा, घोड़े इत्यादि—यदि स्त्रीलिङ्ग हो तो बहुवचन बनाने में कहीं

अन्त्य 'आ' को 'आं' आदेश होता है और कहीं शब्द के अन्त में 'यें' वा 'एं' जोड़ दिया जाता है; जैसे, बिटिया, बिटियां, बिटियायें वा बिटियाएं; शोभा, शोभायें वा शोभाएं इत्यादि।

(उ) इकारान्त शब्द यदि पुंलिङ्ग हो तो वह दोनों वचनों में समान होता है; जैसे, मुनि आया, मुनि आये इत्यादि-यदि स्त्रीलिङ्ग हो तो बहुवचन बनाने में शब्द के अन्त में 'यां' वा 'आं' जोड़ा जाता है। जैसे, तिथि, तिथियां वा तिथिआं इत्यादि।

(ऋ) ईकारान्त शब्द यदि पुंलिङ्ग हो तो वह दोनों वचनों में समान होता है; जैसे, माली गया, माली गये इत्यादि-यदि स्त्रीलिङ्ग हो तो बहुवचन बनाने में शब्द के अन्त में 'यां' वा 'आं' जोड़ा जाता है और ईकार को इकार आदेश होता है; जैसे, बकरी, बकरियां वा बकरिआं इत्यादि।

(ऌ) उकारान्त शब्द यदि पुंलिङ्ग हो तो वह दोनों वचनों में समान होता है; जैसे, साधु बैठा, साधु बैठे इत्यादि—यदि स्त्रीलिङ्ग हो तो बहुवचन बनाने में शब्द के अन्त में 'यें' वा 'एं' वा 'वें' वा 'आं' जोड़ा जाता है; जैसे, वस्तु, वस्तुयें वा वस्तुएं वा वस्तुवें वा वस्तुआं इत्यादि।

(ए) ऊकारान्त शब्द यदि पुंलिङ्ग हो तो वह दोनों वचनों में समान होता है; जैसे, भालू उछला, भालू उछले इत्यादि। यदि स्त्रीलिङ्ग हो तो बहुवचन बनाने में शब्द के अन्त में 'यें' वा 'एं' वा 'वें' वा 'आं' जोड़ा जाता है और ऊकार को उकार आदेश होता है; जैसे, बहू, बहुयें वा बहुएं वा बहुवें वा बहुआं इत्यादि।

(ऐ) एकारान्त और ओकारान्त शब्द पुंलिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग दोनों वचनों में समान होते हैं। औकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'गो' शब्द को

बहुवचन बनाने में शब्द के अन्त में 'यें' वा 'एं' वा 'वें' वा 'श्रां' जोड़ा जाता है; जैसे, गौयें वा गौएं वा गौवें वा गौश्रां इत्यादि।

४ जहां शब्दों के एकवचन और बहुवचन के रूपों में कुछ भेद नहीं होता वहां उनकी पहचान विशेषणों वा क्रियाओं के द्वारा होती है; जैसे, 'अच्छा बालक आया' 'अच्छे बालक आये' इत्यादि।

५ जहां शब्दों के एकवचन और बहुवचन के रूपों में कुछ भेद नहीं होता वहां बहुवचन के बोध के लिये एकवचन से परे 'लोग' 'जाति' 'गण' 'माला' इत्यादि लगाते हैं; जैसे, चौबे लोग, मनुष्य जाति, देवगण, मृगमाला इत्यादि।

६ कारक की विभक्तियों के पूर्व एकवचनान्त और बहुवचनान्त शब्दों के जैसे रूप होते हैं वे आगे चल के शब्द के रूपसाधन की प्रकरण में देखलाये जायेंगे।

उदाहरण—(१) नीचे लिखे शब्दों का बहुवचन बनाओ—

मृग, दरवाजा, राजा, करि, दानी, गुरु, डांकू, पांडे, घास, बुढ़िया, बुद्धि, रानी, मृत्यु, जोरू, धन, तन, दण्डा, बिगहा, मामा, काका, गदहा, पति, कपटी, प्रभु, आंसू, शरीर, नौका, प्रीति, नदी, रेणु, बालू इत्यादि।

पाठ ४। कारक

हे महराज! चोर ने तलवार से गहनों के लिये नगर से दूर एक गढ़े में उस छोटे लड़के के शिर को काट के फेंक दिया।

१ किसने काट के फेंक दिया—चोर ने। 'चोर' वह है जिसने काम किया इसलिये 'चोर' कर्तृ कारक है।

२ किसको काट के फेंक दिया—शिर को। 'शिर' वह है जिस पर काम हुआ इसलिये 'शिर' कर्मकारक है।

३ किससे काट के फेंक दिया—तलवार से। 'तलवार'

वह है जिससे काम किया गया इसलिये 'तलवार' कर्ण-कारक है।

४ किसलिये काट के फेंक दिया—गहनों के लिये। 'गहनों' वह है जिनके लिये काम किया गया इसलिये 'गहनों' सम्प्रदान कारक है।

५ कहां से काम होने लगा—नगर से दूर। 'नगर' वह है जहां से काम होने लगा इसलिये 'नगर' अपादान कारक है।

६ किसका शिर काट के फेंक दिया—लड़के का। 'लड़का' वह है जिसका सम्बन्ध शिर से है इसलिये 'लड़का' सम्बन्ध कारक है।

७ कहां पर काट के फेंक दिया—गड्हे में। 'गड्हा' वह है जहां पर काम किया गया इसलिये 'गड्हा' अधिकरण कारक है।

८ किसको सचेत कर कहता है—महाराज को। 'महाराज' वह है जिसको वक्ता सचेत करके अपने अभिमुख करता है इसलिये 'महाराज' सम्बोधन कारक है।

इन उदाहरणों से यह जाना जाता है कि हिन्दी में आठ कारक हैं—कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध अधिकरण और सम्बोधन।

१ 'कर्त्ता' वह है जो क्रिया के व्यापार को करे; जैसे, 'बालक' दूध पीता है। इसका कोई चिह्न नहीं है परन्तु सामान्यभूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत और सन्दिग्धभूत कालों की क्रिया के कर्त्ता के आगे 'ने' चिह्न आता है; जैसे, बालक ने दूध पिया; बालक ने दूध पिया है; बालक ने दूध पिया था; बालक ने दूध पिया होगा।

२ 'कर्म' वह है जिस पर क्रिया के व्यापार का फल रहे; जैसे, गुरु 'शिष्य को' मारता है। इसका चिह्न 'को' है।

३ 'करण' वह है जिसके द्वारा क्रिया का व्यापार हो; जैसे, राम ने रावण को 'बाण से' मारा। इसके चिह्न 'से, करके' हैं।

४ 'सम्प्रदान' वह है जिसके लिये क्रिया का व्यापार किया जाय; जैसे, कुत्ता 'मालिक के लिये' जान देता है। इसके चिह्न 'को, के लिये' हैं।

५ 'अपादान' वह है जहां से क्रिया का व्यापार अलग वा भिन्न हो; जैसे, उसकी कुरी 'हाथ से' गिर गई। इसका चिह्न 'से' है।

६ 'सम्बन्ध' वह है जिसका किसी दूसरे के साथ सम्बन्ध जाना जाय; जैसे, 'राजा का' घोड़ा आया। इसके चिह्न 'का, के, की' हैं।

७ 'अधिकरण' वह है जिसमें क्रिया की जाय अर्थात् कर्त्ता और कर्म के द्वारा जो क्रिया के व्यापार का अवलम्बन हो; जैसे; बालक 'दर्पण में' मुख देखता है। इसके चिह्न 'में, पर' हैं।

८ 'सम्बोधन' वह है जिससे कोई किसी को सचेत कर अपने अभिमुख करे; जैसे, हे मोहन। इसके बोधक चिह्न 'हे, हो' इत्यादि हैं।

हिन्दी में उक्त कारकों के चिह्नों को जिनसे संज्ञा की अवस्थाएं सूचित होती हैं 'विभक्तियां' कहते हैं। विभक्तिचक्र नीचे लिखा जाता है—

कारक	विभक्ति	कारक	विभक्ति
कर्त्ता	०, ने	अपादान	से
कर्म	को	सम्बन्ध	का, के, की
करण	से, करके	अधिकरण	में, पर
सम्प्रदान	को, के लिये	सम्बोधन	हे, हो इत्यादि (शब्द)

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञा के कारकों को बतलाओ—

कुत्ते ने रोटी खाई। लड़का घोड़े को भगा ले गया । लड़की छुरी से फल काट कर खाती है। उसके हाथ से छुरी गिर गई । ब्राह्मण मन्त्री द्वारा राजा से मिला। घोड़े का सवार आया है। घर में तीन शीशे मिले। उसके घर पर मोहन की रूमाल मिली। खरगोश के कान बड़े होते हैं। कलकत्ते से पेशावर तक रेल है। बच्चों को दूध दो। साधुओं से सच बोलो। खटियों पर सोओ। जोरूओं के गहने लाओ । शत्रु ने उसका माल लूट कर बेंच डाला। वह लड़का अपनी बहिन की गुड़ियां चोरा ले गया।

पाठ ५। संज्ञाओं का रूपसाधन

१ हिन्दी के शब्द स्वरान्त होते हैं व्यञ्जनान्त नहीं । तन मन, धन, इस, उस इत्यादि शब्दों के 'नकार व सकार' में अकार है परन्तु उसका उच्चारण नहीं होता इससे कोई २ लोग ऐसे शब्दों को व्यञ्जनान्त कहते हैं । शुद्ध व्यञ्जनान्त शब्द संस्कृत ही के होते हैं; जैसे, वाक्, राजन्, आत्मन्, वेधन्, विद्वस् इत्यादि। हिन्दी शब्द प्रायः इस रूप में नहीं पाये जाते। अकार की ध्वनि न सुनाई देने के कारण शब्दों के अन्त्य अक्षर का हल् के सदृश लोग व्यवहार भी कर डालते हैं; जैसे, उस +का=उस्का और सक+ता=सक्ता ऐसा ही लिखते हैं न कि शुद्ध लेख 'उसका' और 'सकता'।

(१) आकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के आगे कारक की विभक्तियां लगाने से शब्द के एकवचन में आकार को एकार आदेश होता है; जैसे, लड़के ने, लड़के का, हे लड़के । परन्तु बहुवचन में शब्द के अन्त्य 'आ' को कहीं 'ओं' आदेश होता है और कहीं उसके आगे 'ओं' जोड़ दिया जाता है और सम्बोधन में 'ओ'; जैसे; लड़कों ने, लड़कों का, हे लड़को; राजाओं ने, राजाओं का, हे राजाओ—आकारान्त स्त्रीलिङ्ग

शब्दों के आगे कारक की विभक्तियां लगाने से शब्द के एक-वचन में कुछ विकार नहीं होता ; जैसे, बिटिया ने, बिटिया का, हे बिटिया । परन्तु बहुवचन में शब्द के अन्त्य 'आ' को कहीं 'ओं' आदेश होता है और कहीं उसके आगे 'ओं' जोड़ दिया जाता है और सम्बोधन में 'ओ'; जैसे, खटियों या खटियाओं को, खटियों या खटियाओं पर, हे खटियो या हे खटियाओ ।

(२) शेष स्वरान्त पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दों के आगे कारक की विभक्तियां लगाने से शब्द के एकवचन में कुछ विकार नहीं होता ; जैसे, बालक ने, मुनि को, माली करके, साधु के लिये, भालू से, चौबे का, कोदो में, हे मनुष्य ; भैंस ने, तिथि को, बकरी से, धेनु के लिये, बहू का, गौ में, हे जोरू । परन्तु बहुवचन में अकारान्त शब्द के अन्त्य अकार को दोनों लिङ्गों में 'ओं' आदेश होता है और सम्बोधन में ओ ; जैसे, बालकों के लिये, भैंसों का, हे बालको, हे भैंसो--इकारान्त शब्द के अन्त्य इकार के आगे दोनों लिङ्गों में 'यों' वा 'ओं' जोड़ दिया जाता है और सम्बोधन में 'यो' वा 'ओ'; जैसे, मुनियों को वा मुनिओं को ; तिथियों में वा तिथिओं में; हे मुनियो वा मुनिओ, हे तिथियो वा तिथिओ--ईकारान्त शब्द के अन्त्य ईकार के आगे दोनों लिङ्गों में 'यों' वा 'ओं' जोड़ दिया जाता है और सम्बोधन में 'यो' वा 'ओ' परन्तु अन्त्य ईकार को इकार आदेश होता है ; जैसे, मालियों के लिये वा मालिओं के लिये ; बकरियों का वा बकरिओं का ; हे मालियो वा मालिओ, हे बकरियो वा बकरिओ-उकारान्त शब्द के अन्त्य उकार के आगे दोनों लिङ्गों में 'ओं' वा 'वों' जोड़ दिया जाता है और सम्बोधन में 'ओ' वा 'वो'; जैसे, धेनुओं

से वा धेनुवों से, साधुओं के लिये वा साधुवों के लिये, हे साधुओ वा साधुवो, हे धेनुओ वा धेनुवो । ऊकारान्त शब्द के अन्त्य ऊकार के आगे दोनों लिङ्गों में 'ओं' वा 'वों' जोड़ दिया जाता है और सम्बोधन में 'ओ' वा 'वो' परन्तु अन्त्य ऊकार को उकार आदेश होता है; जैसे, भालुओं का वा भालुवों का, बहुओं से वा बहुवों से; हे भालुओ वा भालुवो, हे बहुओ वा बहुवो—एकारान्त शब्द के अन्त्य एकार को दोनों लिङ्गों में कहीं 'ओं' आदेश होता है और कहीं उसके आगे 'ओं' जोड़ दिया जाता है और सम्बोधन में 'ओ'; जैसे, चौबों को या चौबेओं को, हे चौबो वा हे चोबेओ-ओकारान्त और औकारान्त शब्दों के अन्त्य ओकार वा औकार के आगे दोनों लिङ्गों में 'ओं' अथवा 'वों' जोड़ दिया जाता है और सम्बोधन में 'ओ' वा 'वो'; जैसे, कोदोओं के लिये वा कोदोवों के लिये, गौओं से वा गौवों से, हे कोदोओ वा कोदोवो। कोई २ ओकारान्त शब्द के अन्त्य 'ओ' को 'ओं' आदेश करते हैं; जैसे, कोदों से, सरसों का इत्यादि।

पाठ ६। शब्दरूपावली

१ अकारान्त पुंलिङ्ग 'बालक' शब्द।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	बालक; बालक ने	बालक; बालकों ने
कर्म	बालक; बालक को	बालक; बालकों को
करण	बालक से, करके	बालकों से, करके
सम्प्रदान	बालक को, के लिये	बालकों को, के लिये
अपादान	बालक से	बालकों से
सम्बन्ध	बालक का, के, की	बालकों का, के, की

अधिकरण	बालक में, पर	बालकों में, पर
सम्बोधन	हे बालक	हे बालको

२ आकारान्त पुंलिङ्ग 'लड़का' शब्द ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	लड़का ; लड़के ने	लड़के ; लड़कों ने
कर्म	लड़के ; लड़कों को	लड़के ; लड़कों को
करण	लड़के से, करके	लड़कों से, करके
सम्प्रदान	लड़के को, के लिये	लड़कों को, के लिये
अपादान	लड़के से	लड़कों से
सम्बन्ध	लड़के का, के, की	लड़कों का, के, की
अधिकरण	लड़के में, पर	लड़कों में; पर
सम्बोधन	हे लड़के	हे लड़को

३ आकारान्त पुंलिङ्ग 'नाना' शब्द ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	नाना; नाना ने	नाना ; नानाओं ने
कर्म	नाना ; नाना को	नाना ; नानाओं को
करण	नाना से, करके	नानाओं से, करके
सम्प्रदान	नाना को, के लिये	नानाओं को, के लिये
अपादान	नाना से	नानाओं से
सम्बन्ध	नाना का, के, की	नानाओं का, के, की
अधिकरण	नाना में, पर	नानाओं में, पर
सम्बोधन	हे नाना	हे नानाओ

४ आकारान्त पुंलिङ्ग 'दादा' शब्द ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	दादा ; दादे या दादा ने	दादा ; दादे ; दादों या दादाओं ने

कर्म	दादा ; दादे या दादा को	दादा ; दादे ; दादों या दादाओं को
करण	दादे या दादा से, करके	दादों या दादाओं से, करके
सम्प्रदान	दादे या दादा को, के लिये	दादों या दादाओं को, के लिये
अपादान	दादे या दादा से	दादों या दादाओं से
सम्बन्ध	दादे या दादा का, के, को	दादों या दादाओं का, के, की
अधिकरण	दादे या दादा में, पर	दादों या दादाओं में, पर
सम्बोधन	हे दादे या हे दादा	हे दादो या हे दादाओ

५ इकारान्त पुंलिङ्ग 'मुनि' शब्द।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	मुनि ; मुनि ने	मुनि ; मुनियों या मुनिओं ने
कर्म	मुनि ; मुनि को	मुनि ; मुनियों या मुनिओं को
करण	मुनि से, करके	मुनियों या मुनिओं से, करके
सम्प्रदान	मुनि को, के लिये	मुनियों या मुनिओं को, के लिये
अपादान	मुनि से	मुनियों या मुनिओं से
सम्बन्ध	मुनि का, के, को	मुनियों या मुनिओं का, के, की
अधिकरण	मुनि में, पर	मुनियों या मुनिओं में, पर

सम्बोधन	हे मुनि	हे मुनियो या मुनिओ

६ ईकारान्त पुंलिङ्ग 'माली' शब्द ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	माली ; माली ने	माली ; मालियों या मालिओं ने
कर्म	माली ; माली को	माली ; मालियों या मालिओं को
करण	माली से, करके	मालियों या मालिओं से, करके
सम्प्रदान	माली को, के लिये	मालियों या मालिओं को, के लिये
अपादान	माली से	मालियों या मालिओं
सम्बन्ध	माली का, के, की	मालियों या मालिओं का, के, की
अधिकरण	माली में, पर	मालियों या मालिओं में, पर
सम्बोधन	हे माली	हे मालियो या हे मालिओ

७ उकारान्त पुंलिङ्ग 'साधु' शब्द ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	साधु ; साधु ने	साधु ; साधुओं या साधुवों ने
कर्म	साधु ; साधु को	साधु ; साधुओं या साधुवों को
करण	साधु से, करके	साधुओं या साधुवों से, करके

सम्प्रदान	साधु को, के लिये	साधुओं या साधुवों को, के लिये
अपादान	साधु से	साधुओं या साधुवों से
सम्बन्ध	साधु का, के, की	साधुओं या साधुवों का, के, की
अधिकरण	साधु में, पर	साधुओं या साधुवों में, पर
सम्बोधन	हे साधु	हे साधुओ या हे साधुवो

८ ऊकारान्त पुंलिङ्ग 'भालू' शब्द।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	भालू ; भालू ने	भालू ; भालुओं या भालुवों ने
कर्म	भालू ; भालू को	भालू ; भालुओं या भालुवों को
करण	भालू से, करके	भालुओं या भालुवों से, करके
सम्प्रदान	भालू को, के लिये	भालुओं या भालुवों को, के लिये
अपादान	भालू से	भालुओं या भालुवों से
सम्बन्ध	भालू का, के, की	भालुओं या भालुवों का, के, की
अधिकरण	भालू में, पर	भालुओं या भालुवों में, पर
सम्बोधन	हे भालू	हे भालुओ या हे भालुवो

९ एकारान्त पुंलिङ्ग 'पांड़े' शब्द।

कारक	एकवचन	बहुवचन

कर्त्ता	पांड़े ; पांड़े ने	पांड़े ; पांड़ेओं ने
कर्म	पांड़े ; पांड़े को	पांड़े ; पांड़ेओं को
करण	पांड़े से, करके	पांड़ेओं से, करके
सम्प्रदान	पांड़े को, के लिये	पांड़ेओं को, के लिये
अपादान	पांड़े से	पांड़ेओं से
सम्बन्ध	पांड़े का, के, की	पांड़ेओं का, के, की
अधिकरण	पांड़े में, पर	पांड़ेओं में, पर
सम्बोधन	हे पांड़े	हे पांड़ेओ

१० एकारान्त पुंलिङ्ग 'चौबे' शब्द ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	चौबे ; चौबे ने	चौबे ; चौबों या चौबेओं ने
कर्म	चौबे ; चौबे को	चौबे ; चौबों या चौबेओं को
करण	चौबे से, करके	चौबों या चौबेओं से, करके
सम्प्रदान	चौबे को, के लिये	चौबों या चौबेओं को, के लिये
अपादान	चौबे से	चौबों या चौबेओं से
सम्बन्ध	चौबे का, के, की	चौबों या चौबेओं का, के, की
अधिकरण	चौबे में, पर	चौबों या चौबेओं में, पर
सम्बोधन	हे चौबे	हे चौबो या हे चौबेओ

११ ओकारान्त पुंलिङ्ग 'कोदो' शब्द ।

कारक	एकवचन	बहुवचन

कर्त्ता	कोदो ; कोदो ने	कोदो; कोदों या कोदोओं ने
कर्म	कोदो ; कोदो को	कोदो; कोदों या कोदोओं को
करण	कोदो से, करके	कोदों या कोदोओं से, करके
सम्प्रदान	कोदो को, के लिये	कोदों या कोदोओं को, के लिये
अपादान	कोदो से	कोदों या कोदोओं से
सम्बन्ध	कोदो का, के, को	कोदो या कोदोओं का, के, की
अधिकरण	कोदो में, पर	कोदों या कोदोओं में, पर
सम्बोधन	हे कोदो	हे कोदोओ

१२ अकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'भैंस' शब्द ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	भैंस ; भैंस ने	भैंस, भैंसें ; भैंसों ने
कर्म	भैंस ; भैंस को	भैंस, भैंसें ; भैंसों को
करण	भैंस से, करके	भैंसों से, करके
सम्प्रदान	भैंस को, के लिये	भैंसों को, के लिये
अपादान	भैंस से	भैंसों से
सम्बन्ध	भैंस का, के, की	भैंसों का, के, की
अधिकरण	भैंस में, पर	भैंसों में, पर
सम्बोधन	हे भैंस	हे भैंसो

१३ आकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'बिटिया' शब्द ।

कारक	एकवचन	बहुवचन

कर्त्ता	बिटिया ; बिटिया ने	बिटियां ; बिटियों ने
कर्म	बिटिया ; बिटिया को	बिटियां ; बिटियों को
करण	बिटिया से, करके	बिटियों से, करके
सम्प्रदान	बिटिया को, के लिये	बिटियों को, के लिये
अपादान	बिटिया से	बिटियों से
सम्बन्ध	बिटिया का, के, की	बिटियों का, के, की
अधिकरण	बिटिया में, पर	बिटियों में, पर
सम्बोधन	हे बिटिया	हे बिटियो

१४ आकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'बालिका' शब्द ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	बालिका ; बालिका ने	बालिका ; बालिकायें ; बालिकाएँ ; बालिकाओं ने
कर्म	बालिका; बालिका को	बालिका; बालिकायें; बालिकाएँ; बालिकाओं को
करण	बालिका से, करके	बालिकाओं से, करके
सम्प्रदान	बालिका को, के लिये	बालिकाओं को, के लिये
अपादान	बालिका से	बालिकाओं से
सम्बन्ध	बालिका का, के, की	बालिकाओं का, के, की
अधिकरण	बालिका में, पर	बालिकाओं में, पर
सम्बोधन	हे बालिका	हे बलिकाओ

१५ इकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'तिथि' शब्द ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	तिथि ; तिथि ने	तिथि ; तिथियां ; तिथिआं ; तिथियों या तिथिओं ने
कर्म	तिथि; तिथि को	तिथि; तिथियां; तिथिआं; तिथियों या तिथिओं को

करण	तिथि से, करके	तिथियों या तिथिओं से, करके
सम्प्रदान	तिथि को, के लिये	तिथियों या तिथिओं को, के लिये
अपादान	तिथि से	तिथियों या तिथिओं से
सम्बन्ध	तिथि का, के, की	तिथियों या तिथिओं का, के, की
अधिकरण	तिथि में, पर	तिथियों या तिथिओं में, पर
सम्बोधन	हे तिथि	हे तिथियो या हे तिथिओ

१६ ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'बकरी' शब्द।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	बकरी; बकरी ने	बकरी; बकरियां; बकरिआं; बकरियों या बकरिओं ने
कर्म	बकरी; बकरी को	बकरी; बकरियां; बकरिआं; बकरियों या बकरिओं को
करण	बकरी से, करके	बकरियों या बकरिओं से, करके
सम्प्रदान	बकरी को, के लिये	बकरियों या बकरिओं को, के लिये
अपादान	बकरी से	बकरियों से या बकरिओं से
सम्बन्ध	बकरी का, के, की	बकरियों या बकरिओं का, के, की
अधिकरण	बकरी में, पर	बकरियों या बकरिओं में, पर
सम्बोधन	हे बकरी	हे बकरियो या हे बकरिओ

१७ उकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'धेनु' शब्द ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	धेनु ; धेनु ने	धेनु; धेनुश्रां; धेनुयें; धेनुएं; धेनुश्रों या धेनुवों ने
कर्म	धेनु; धेनु को	धेनु; धेनुश्रां; धेनुयें; धेनुएं; धेनुश्रों या धेनुवों को
करण	धेनु से, करके	धेनुश्रों या धेनुवों से, करके
सम्प्रदान	धेनु को, के लिये	धेनुश्रों या धेनुवों को, के लिये
अपादान	धेनु से	धेनुश्रों या धेनुवों से
सम्बन्ध	धेनु का, के, की	धेनुश्रों या धेनुवों का, के, की
अधिकरण	धेनु में, पर	धेनुश्रों या धेनुवों में, पर
सम्बोधन	हे धेनु	हे धेनुश्रो या हे धेनुवो

१८ ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'बहू' शब्द ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	बहू ; बहू ने	बहू; बहुश्रां; बहुएं; बहुएं; बहुश्रों या बहुवों ने
कर्म	बहू ; बहू को	बहू; बहुश्रां; बहुयें; बहुएं; बहुश्रों या बहुवों को
करण	बहू से, करके	बहुश्रों या बहुवों से, करके
सम्प्रदान	बहू को, के लिये	बहुश्रों या बहुवों को, के लिये

अपादान	बहू से	बहुओं या बहुवों से
सम्बन्ध	बहू का, के, की	बहुओं या बहुवों का, के, की
अधिकरण	बहू में, पर	बहुओं या बहुवों में, पर
सम्बोधन	हे बहु	हे बहुओ या हे बहुवो

१९. एकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'श्यामटे' शब्द के रूप एकारान्त पुंलिङ्ग शब्द के रूप के समान होते हैं। परन्तु हिन्दी में एकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द मिलते नहीं।

२० ओकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'सरसों' शब्द के रूप ओकारान्त पुंलिङ्ग शब्द के रूप के समान होते हैं।

२१ औकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'गौ' शब्द।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	गौ ; गौ ने	गौ ; गौआं; गौयें; गौएं; गौओं या गौवों ने
कर्म	गौ ; गौ को	गौ ; गौआं; गौयें; गौएं; गौओं या गौवों को
करण	गौ से, करके	गौओं या गौवों से, करके
अपादान	गौ से	गौओं या गौवों से
सम्प्रदान	गौ को, के लिये	गौओं या गौवों को, के लिए
सम्बन्ध	गौ का, के, की	गौओं या गौवों का, के, की
अधिकरण	गौ में, पर	गौओं या गौवों में, पर
सम्बोधन	हे गौ	हे गौओ या हे गौवो

उदाहरण। इसी प्रकार ऊपर लिखे शब्दों के अनुसार नीचे लिखे शब्दों के रूप कहो—मृग, मनुष्य, दरवाजा, दाता, ऋषि, रवि, कपटी, ज्ञानी, गुरु, प्रभु, आलू, डांकू, दूबे, मादों, साधो, शरीर, घास, ठिलिया, बुढ़िया, रीति, नीति, नदी, रानी, आयु, रेणु, बालू जोरू, सरसों इत्यादि।

पाठ ७। सर्वनाम

१ सर्वनाम के पांच भेद हैं—पुरुषबोधक, सम्बन्धवाचक, प्रश्नवाचक, निश्चयवाचक और अनिश्चयवाचक।

(अ) मैं ने मोहन को देखा, वह वाटिका में था, परन्तु वह मुझको नहीं देख सका। इस उदाहरण का यह अर्थ हुआ कि मैं ने मोहन को देखा, मोहन वाटिका में था, परन्तु मोहन मुझको नहीं देख सका। 'मोहन' शब्द का वारंवार कहना सुनने में अच्छा नहीं लगता और वाक्य भी कुढंगा हो जाता है इसलिये 'मोहन' के स्थान में 'वह' का प्रयोग किया जाता है। 'वह' शब्द 'मोहन' के लिये आया है इसलिये 'वह' पुरुषबोधक सर्वनाम है।

२ पुरुषबोधक सर्वनाम उसे कहते हैं जो पुरुष का बोध कराता है; जैसे, मैं, तू, वह (एकवचन) और हम, तुम, वे (बहुवचन) इत्यादि। 'आप' यह पुरुषबोधक आदरसूचक सर्वनाम है जो सदा बहुवचन में प्रयुक्त होता है।

(क) पुरुष तीन हैं—बोलनेवाला उत्तमपुरुष है; जैसे, मैं, हम। जिससे बोलते हैं वह मध्यमपुरुष है; जैसे, वह, वे। कारक की विभक्तियों के पूर्व कर्त्ता को छोड़ अन्य कारकों में 'मैं' को 'मुझ' और 'तू' को 'तुझ' आदेश होता है और 'हम' और 'तुम' ज्यों के-त्यों बने रहते हैं पर सम्प्रदान और सम्बन्ध में 'मैं' को 'मेरा' और 'तू' को 'तेरा' और 'हम'

को 'हमारा' और 'तुम' को 'तुम्हारा' वा 'तुमारा' आदेश होता है। 'वह' को 'उस' और 'वे' को 'उन', 'उन्हीं' सर्वत्र आदेश होता है।

☞ संज्ञा के समान सर्वनाम के भी लिंग, वचन और कारक होते हैं। पर हिन्दी में लिंग भेद से सर्वनाम का रूप-भेद नहीं होता।

(३) जो लड़का पढ़ता था वह बैठ गया--यह लिखने का व्यवहार है परन्तु वाक्य ऐसा है 'वह लड़का जो पढ़ता था बैठ गया'। 'जो' का सम्बन्ध 'लड़के' से है इसलिये 'जो' सम्बन्धवाचक सर्वनाम है।

२ सम्बन्धवाचक सर्वनाम उसे कहते हैं जो कहे हुए संज्ञा शब्द से कुछ सम्बन्ध बताता है; जैसे, जो पुस्तक आप ने देखी थी वह गुम हो गई।

(च) 'जो', 'जौन' और इनके परस्पर सम्बन्धबोधक 'सो', 'तौन' ये सम्बन्धबोधक सर्वनाम हैं--एकवचन और बहुवचन दोनों में 'जो' और 'सो' के रूप समान होते हैं; जैसे, जो बरा सो बुताना, जौन सुख तब था तौन अब नहीं है। कारक की विभक्तियों के पूर्व सब कारकों के एकवचन में 'जो' को 'जिस' और बहुवचन में 'जिन' 'जिन्हें' सर्वत्र आदेश होता है।

३ प्रश्नवाचक सर्वनाम उसे कहते हैं जिसके उच्चारण से प्रश्न का बोध होता है; जैसे, कौन, क्या। 'कौन' का प्रयोग दोनों वचनों में होता है और 'क्या' का एकवचन में। कारक की सब विभक्तियों के पूर्व एकवचन में 'कौन' को 'किस' और बहुवचन में 'किन' व 'किन्हों' आदेश होता है कर्त्ता और कर्म को छोड़ शेष कारक की विभक्तियों के पूर्व 'क्या' को 'काहे' आदेश होता है।

४ निश्चयवाचक सर्वनाम उसे कहते हैं जिसके उच्चारण से किसी का निश्चय हो; जैसे, यह, वह (एकवचन) और ये, वे (बहुवचन)। 'यह' 'ये' से निकटवर्ती पदार्थ का निश्चय होता है और 'वह' 'वे' से दूरवर्ती का। कारक की विभक्तियों के पूर्व 'यह' को 'इस' और 'ये' को 'इन' वा 'इन्हों' सर्वत्र आदेश होता है।

५ अनिश्चयवाचक सर्वनाम उसे कहते हैं जिसके उच्चारण से किसी विशेष का निश्चय नहीं हो सकता; जैसे, कोई, कुछ। अनिश्चित संख्या परिमाणवाचक शब्द 'सब' है। 'कोई' का प्रयोग एकवचनही में होता है। कारक की विभक्तियों के पूर्व 'कोई' को 'किसी' सर्वत्र आदेश होता है। 'कुछ' यह शब्द यद्यपि सर्वनाम है परन्तु अव्यय होने से इसके उत्तर बहुधा विभक्ति नहीं लगती; जैसे, कुछ बात, कुछ लोग इत्यादि। 'कुछ का कुछ' इत्यादि का प्रयोग होता है।

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों में सर्वनामों को बतलाओ—मैं ने तुझसे कहा था कि वह आवेगी। तुम ने उससे सच कहा। मैं तुम से इस बात का निश्चय कराता हूं कि पुस्तक मेरी है। क्या वह घर तुम्हारा है। नहीं वह उनका है। तुम उन दोनों को उसके साथ जाने दो। सोहन को उसकी मा के पास भेज दो। उसने उसको बोलाया है। जो स्त्री तुम्हारे मकान पर गई थी उसे मैं जानता हूँ। जिस मित्र को तू चाहता है वह बीमार है। जो मकान जल कर खाक हो गया था वह फिर से बन गया। जिन महात्मा पुरुष से आप मिले थे उन्होंने मेरे पुत्र को दो पुस्तकें दी हैं। कुछ तो कहो। कोई नोकर आवे। जो होना था सो हो गया। आप क्या चाहते हैं। कौन आया है। उससे कहो द्वार बन्द कर ले।

पाठ ८। सर्वनामों की रूपावली

१ उत्तमपुरुष 'मैं' शब्द।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	मैं; मैं ने	हम; हम ने
कर्म	मुझे, मुझको; मुजे, मुजको	हमें, हमको
करण	मुझसे, करके—मुजसे, करके	हमसे, करके
सम्प्रदान	मुझे, मुझको; मुजे, मुजको; मेरे लिये	हमें, हमको; हमारे लिये
अपादान	मुझसे, मुजसे	हम से
सम्बन्ध	मेरा, रे, री	हमारा, रे, री
अधिकरण	मुझमें, पर—मुजमें, पर	हम में, पर

२ मध्यमपुरुष 'तू' शब्द।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	तू, तूँ, तैं; तू ने, तैं ने	तुम; तुम ने
कर्म	तुझे, तुझको; तुजे, तुजको	तुम्हें, तुमें; तुमको
करण	तुझसे, करके—तुजसे, करके	तुम से, करके
सम्प्रदान	तुझे, तुझको; तुजे, तुजको; तेरे लिये	तुम्हें, तुमें, तुमको; तुम्हारे लिये-तुमारे लिये
अपादान	तुझसे, तुजसे	तुम से
सम्बन्ध	तेरा, रे, री	तुम्हारा, रे, री—तुमारा, रे, री
अधिकरण	तुझमें, पर—तुजमें, पर	तुम में, पर

३ आदरसूचक 'आप' शब्द।

कारक	बहुवचन
कर्त्ता	आप, आप ने—आप लोग, आप लोगों ने

कर्म	आप को—आप लोगों को
करण	आप से, करके—आप लोगों से, करके
सम्प्रदान	आप को, के लिये—आप लोगों को, के लिये
अपादान	आप से—आप लोगों से
सम्बन्ध	आप का, के, को—आप लोगों का, के, को
अधिकरण	आप में, पर—आप लोगों में, पर

४ अन्यपुरुष 'वह' शब्द।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	वह; उसने	वे; उनने—उन्होंने
कर्म	उसे; उसको	उन्हें; उनको—उन्होंको
करण	उससे, उसकरके	उनसे, उन्होंसे—उनकरके, उन्हों करके
सम्प्रदान	उसे; उसको—उसके लिये	उन्हें; उनको, उन्होंको—उनके लिये, उन्होंके लिये
अपादान	उससे	उनसे—उन्होंसे
सम्बन्ध	उसका, उसके, उसकी	उनका, उन्होंका—उनके, उन्हों के—उनकी, उन्होंकी
अधिकरण	उसमें, उसपर	उनमें, उन्होंमें—उनपर, उन्होंपर

५ सम्बन्धवाचक (?) 'जो' (जौन) शब्द।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	जो (जौन); जिसने	जो (जौन); जिनने, जिन्होंने
कर्म	जिसे; जिसको	जिन्हें; जिनको—जिन्होंको
करण	जिससे, जिसकरके	जिनसे, जिन्हों से—जिनकरके, जिन्हों करके

सम्प्रदान	जिसे; जिसको—जिसके लिये	जिन्हें; जिनको—जिनके लिये; जिन्होंके लिये
अपादान	जिससे	जिनसे—जिन्होंसे
सम्बन्ध	जिसका, जिसके, जिसकी	जिनका, जिनके, जिनकी—जिन्होंका, जिन्होंके, जिन्होंकी
अधिकरण	जिसमें, जिसपर	जिनमें, जिनपर—जिन्होंमें, जिन्होंपर

६ सम्बन्धवाचक (१) 'सो' (तौन) शब्द ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	सो (तौन) तिसने	सो (तौन); तिनने-तिन्हों ने
कर्म	तिसे ; तिसको	तिन्हें ; तिनको-तिन्होंको
करण	तिससे, तिस करके	तिनसे, तिन्होंसे-तिनकरके; तिन्हों करके
सम्प्रदान	तिसे ; तिसको, तिसके लिये	तिन्हें ; तिनको, तिन्हों को-तिनके लिये, तिन्होंके लिये
अपादान	तिससे	तिनसे—तिन्होंसे
सम्बन्ध	तिसका, तिसके, तिसकी	तिनका, तिनके, तिनकी—तिन्होंका, तिन्होंके, तिन्होंकी
अधिकरण	तिसमे, तिसपर	तिनमें, तिनपर—तिन्होंमें, तिन्होंपर

७ प्रश्नवाचक (१) 'कौन' शब्द ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	कौन ; किसने	कौन ; किनने—किन्होंने
कर्म	किसे, किसको	किन्हें ; किनको—किन्होंको
करण	किससे, किसकरके	किनसे, किनकरके किन्होंसे, किन्होंकरके

सम्प्रदान	किसे ; किसको ; किसके लिये	किन्हें, किनको, किनके लिये; किन्होंको, किन्होंके लिये
अपादान	किससे	किनसे ; किन्होंसे
सम्बन्ध	किसका, किसके, किसकी	किनका, किनके, किनकी—किन्होंका, किन्होंके, किन्होंकी
अधिकरण	किसमें, किसपर	किनमें, किनपर-किन्हों में, किन्होंपर

८ प्रश्नवाचक (२) 'क्या' शब्द ।

कारक	एकवचन
कर्त्ता	क्या
कर्म	क्या
करण	काहेसे, काहेकरके
सम्प्रदान	काहेको, काहेके लिये
अपादान	काहेसे
सम्बन्ध	काहेका, काहेके, काहेकी
अधिकरण	काहेमें, काहेपर

९ निश्चयवाचक (१) 'यह' शब्द ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	यह ; इसने	ये; इनने—इन्होंने
कर्म	इसे ; इसको	इन्हें ; इनको—इन्होंको
करण	इससे; इस करके	इनसे, इन्होंसे—इनकरके, इन्होंकरके
सम्प्रदान	इसे; इसको; इसके लिये	इन्हें; इनको, इन्होंको—इनके लिये, इन्होंके लिये
अपादान	इससे	इनसे, इन्होंसे

सम्बन्ध	इसका, इसके, इसकी	इनका, इनके, इनकी-इन्होंका इन्होंके, इन्होंको
अधिकरण	इसमें, इसपर	इनमें, इनपर-इन्होंमें, इन्होंपर

निश्चयवाचक (२) 'वह' शब्द। उसका रूप ऊपर कह आये हैं।

१० निश्चयवाचक (१) 'कोई' शब्द।

कारक	एकवचन
कर्त्ता	कोई, किसीने
कर्म	किसीको
करण	किसीसे, किसीकरके
सम्प्रदान	किसीको, किसीके लिये
अपादान	किसीसे
सम्बन्ध	किसीका, किसीके, किसीकी
अधिकरण	किसीमें, किसीपर

११ अनिश्चयवाचक (२) 'सब' शब्द।

कारक	बहुवचन
कर्त्ता	सब, सब ने—सभोंने
कर्म	सब; सब को—सभोंको
करण	सब से, सभोंसे—सब करके, सभोंकरके
सम्प्रदान	सब को, सभोंको—सब के लिये, सभोंके लिये
अपादान	सब से, सभोंसे
सम्बन्ध	सब का, सब के, सब की—सभोंका, सभोंके, सभोंकी
अधिकरण	सब में, सब पर—सभोंमें, सभोंपर

१२ निजबोधक 'आप' शब्द।

कारक	एकवचन या बहुवचन

कर्त्ता	आप, अपने आप
कर्म	अपनेको, अपने आप को, अपनेतईं
करण	अपनेसे, अपनेकरके-अपने आपसे, अपने आपकरके
सम्प्रदान	अपनेको, अपने लिये-अपने आप को, अपने आप के लिये
अपादान	अपने से, अपने आप से
सम्बन्ध	अपना, अपने, अपनी-अपने आप का, अपने आप के, अपने आप की
अधिकरण	अपने में, अपने पर-अपने आप में, अपने आप पर

पाठ ९। विशेषण

१ सोहन लंबा है। मोहन सोहन से लंबा है। रोहन मोहन सोहन दोनों से लंबा है।

पहिले वाक्य में सोहन के लंबे होने की अवस्था जानी जाती है। दूसरे वाक्य में मोहन के सोहन से अधिक लंबे होने की अवस्था जानी जाती है। तीसरे वाक्य में रोहन के मोहन और सोहन दोनों से अधिक लंबे होने की अवस्था जानी जाती है।

२ गोपाल छोटा है। नैपाल गोपाल से भी छोटा है। जैपाल गोपाल नैपाल दोनों ही से छोटा है।

पहिले वाक्य में गोपाल के छोटे होने की अवस्था जानी जाती है। दूसरे वाक्य में नैपाल का गोपाल से भी छोटे होने की अवस्था जानी जाती है। तीसरे वाक्य में जैपाल के गोपाल और नैपाल दोनों ही से छोटे होने की अवस्था जानी जाती है।

३ इमली खट्टी होती है। आम इमली से अधिक खट्टा होता है। नीबू आम इमली दोनों से अधिक खट्टा होता है।

४ सोना भारी होता है। चांदी सोने से कम भारी होती है। तांबा सोने चांदी दोनों से कम भारो होता है।

५ इन प्रकारों से अधिकता वा न्यूनता प्रकाश करने को विशेषणातोलन कहते हैं। इसकी तीन अवस्थायें होती हैं।

(१) यथार्थरूपवाचक; जैसे, मीठा। (२) उपमालन्यवाचक; जैसे, अधिक वा कम मीठा। (३) परमावधिवाचक; जैसे, सब से अधिक वा कम मीठा।

(अ) जहां दो वस्तुओं की तुलना होती है वहां उपमाल-न्यवाचक विशेषण का प्रयोग किया जाता है, जैसे, घोड़ा गदहे से ऊँचा होता है। यहां यथार्थरूपवाचक विशेषण में कुछ विकार नहीं होता परन्तु जिससे तुलना करते हैं उसका या तो अपादान कारक होता है या उसके सम्बन्धकारक के आगे 'अपेक्षा' इस शब्द का प्रयोग किया जाता है; जैसे, इस पाठ की अपेक्षा वह पाठ कठिन है। जहां दो वस्तुओं से अधिक की तुलना की जातो है वहां परमावधिवाचक विशेषण का प्र-योग किया जाता है; जैसे, ऊँट घोड़े गदहे दोनों से ऊँचा होता है। यहां यथार्थरूपवाचक विशेषण में कुछ विकार नहीं होता परन्तु जिससे तुलना करते हैं उसके अपादान कारक के पूर्व संख्यावाचक शब्द भो आता है; जैसे, गोपाल सब से अच्छा है।

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों में विशेषणातोलन बतलाओ—एक बड़ा सेब दो; उस सेब से बड़ा; उन पांचों से बड़ा। दीवार ऊंची है; वृक्ष उससे ऊंचा है; परन्तु घर सब से ऊंचा है। बलवान मनुष्य दुर्बल मनुष्य की अपेक्षा अधिक परिश्रमी होता है। भारतवर्ष में कलकत्ता सब से बड़ा नगर है। मेरी जेबघड़ी उसकी बड़ी अंगूठी से छोटी है। बालिका की अपेक्षा बालक रूपवान् है। तुम्हारी टोपी से उसकी टोपी नई है।

६ (क) एक, दो, तीन, चार, पांच, छ, सात, इत्यादि को

संख्यावाचक विशेषण कहते हैं क्योंकि इनसे संख्या जानी जाती है।

(ख) पहिला दूसरा तीसरा चौथा पांचवां छठां सातवां इत्यादि को संख्येय अथवा क्रमवाचक विशेषण कहते हैं क्योंकि इनसे क्रम जाना जाता है।

७ संख्यावाचक से क्रमवाचक बनाने के लिये संख्याओं से परे 'वां' जोड़ा जाता है; जैसे, सात से सातवां, ग्यारह से ग्यारहवां, चालीस से चालीसवां इत्यादि। परन्तु एक को पहिला, दो को दूसरा, तीन को तीसरा, चार को चौथा, और छ को छठां या छठवां आदेश होता है॥

पाठ १० । समस्तसंज्ञापद अर्थात् समास

१ समास का अर्थ संक्षेप करना है। जहां अनेक पदों के उत्तर विभक्तियों का लोप करने पर भी विवक्षित अर्थ के बोध में बाधा नहीं होती वहां (लुप्तविभक्तिक) अनेक पदों को एक पद के रूप में बना लेते हैं और उसकी कारकरचना करते हैं। निदान उक्तविध अनेक पदों का एक पद बनना समास है।

२ समास ६ प्रकार के हैं-अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, बहुव्रीहि और द्वन्द्व।

(१) (समासावयवभूत) अव्ययपद के अर्थ की प्रधानता विवक्षित रहते अव्यय पद के साथ जो अन्य २ पद का समास किया जाता है वह अव्ययीभाव समास है। अव्ययीभाव समास से सिद्धपद प्रायः अव्यय होता है; जैसे, यथाशक्ति, अनुचर इत्यादि।

(अ) कभी २ जो पद अव्यय नहीं हैं वे भी (किसी को प्रधान करके) आपस में समास पा के अव्ययपद बन जाते हैं जिससे उनका भी समास अव्ययीभाव कहा जाता है; जैसे,

भरसक, लगभग इत्यादि। इस प्रकार के शब्द बहुधा क्रिया-विशेषण होते हैं। 'परस्पर' में भी अव्ययीभाव समास है।

(२) तत्पुरुष समास वहां होता है जहां उत्तर पद का अर्थ प्रधान रहता है और इसमें कर्म से ले के अधिकरण तक कोई कारक पूर्व पद होता है; जैसे, शरणागत, विद्याहीन, गोहित, चोरभय, राजपुरुष, पुरुषोत्तम इत्यादि।

(अ) नकार निषेधात्मक अव्यय शब्द है। इसके साथ समस्त पद क्वचित् अव्ययीभाव क्वचित् तत्पुरुष और क्वचित् बहुव्रीहि भी होता है। उत्तरपद स्वरादि हो तो 'न' के स्थान में 'अन्' होता है और व्यञ्जनादि हो तो 'न' के स्थान में 'अ' आदेश होता है; जैसे, अनशन, अकण्टक, अज्ञान इत्यादि। कभी २ 'न' का 'न' भी बना रहता है; जैसे, नग वा अग (पर्वत) इत्यादि।

(३) विशेषणात्मक शब्दों का परस्पर समास अथवा विशेषण के साथ उसके विशेष्य का समास कर्मधारय समास कहाता है; जैसे, चितकबरा, नीलघट, परमात्मा, सत्पुरुष इ०।

(४) उत्तरपद के समाहार (समूह) इत्यादि अर्थ में से कोई अर्थ विवक्षित रहते उस (उत्तरपद) के साथ जहां कोई संख्यावाचक पूर्वपद समस्त होता है तो वैसे समास को द्विगु कहते हैं। समाहार अर्थ में द्विगु का प्रायः एकवचन में प्रयोग होता है; जैसे, 'त्रिभुवन' इत्यादि। कभी २ द्विगुसमासविशिष्टपद स्त्रीलिङ्ग में भी प्रयुक्त होता है; जैसे, चौमुहानी, छमासी (षाण्मासिकी), दुअन्नी, चौअन्नी, अठन्नी, छदमची (षड्द्रम्माची) इत्यादि।

(५) जब किसी अन्य अर्थ को प्रधान (उद्दिष्ट) करके अनेक पदों का एक समास होता है तब वह बहुव्रीहि (समास)

कहलाता है। बहुव्रीहि में जो अन्य अर्थ प्रधान रहता है बहुव्रीहिसिद्ध पद उसका विशेषण होता है; जैसे, पीताम्बर, मृगलोचनी, पिकवयनी इत्यादि।

(अ) 'सह' यह अव्यय शब्द पूर्वपद रह के जब बहुव्रीहि समास होता है तब 'सह' शब्द के स्थान में 'स' आदेश भी किया जा सकता है; जैसे, सरोष वा सहरोष।

(इ) एकाधिक दश=एकादश (ग्यारह) इत्यादि शब्द बहुव्रीहिसमाससिद्ध हैं।

(६) अनेकों का पृथक् २ एक से अन्वय विवक्षित रहते उन (अनेकों) का परस्पर समास द्वन्द्व समास कहा जाता है। द्वन्द्व समास में शब्दों के मध्य में संयोजक 'और' इस शब्द का लोप कर दिया जाता है; जैसे, रामलक्ष्मण, हाथपांव, मातापिता, गुरुशिष्य, रातदिन इत्यादि॥

पाठ ११। क्रिया

सकर्मक, अकर्मक, कर्तृप्रधान, कर्मप्रधान और भावप्रधान।

(अ) बढ़ई चौकी बनाता है-इस वाक्य में बढ़ई कर्त्ता है। उसका व्यापार लकड़ी चीरना, रंदा करना इत्यादि है; उसका फल चौकी बनना है सो चौकी पर आता है न कि बढ़ई पर, इसलिये 'बनाना' क्रिया सकर्मक है।

१ सकर्मक क्रिया उसे कहते हैं जिस क्रिया के करने में कर्त्ता के व्यापार का फल कर्त्ता को छोड़ दूसरे में जाता हो; जैसे, लड़के ने घोड़े को मारा।

(इ) रामदत्त उठता है—यहां रामदत्त कर्त्ता है; उसके उठने का व्यापार और उसका फल उठना ये दोनों उस रामदत्तही में निरूपित हैं इसलिये 'उठना' क्रिया अकर्मक है।

२ अकर्मक क्रिया उसे कहते हैं जिस क्रिया के करने में कर्त्ता के व्यापार का फल कर्त्ता ही में आवे; जैसे, मोहन हंसता है।

(उ) राम ने अहिल्या को तारा; अहिल्या राम से तारी गई। इन उदाहरणों में पहिले उदाहरण की सकर्मक क्रिया के लिङ्ग वचन कर्त्ता के लिङ्ग वचन के अनुसार हैं; इसलिये यह कर्तृ प्रधान क्रिया है। दूसरे उदाहरण की सकर्मक क्रिया के लिङ्ग वचन कर्म के लिङ्ग वचन के अनुसार हैं; इसलिये यह कर्मप्रधान क्रिया है।

३ कर्तृ प्रधान सकर्मक क्रिया वह है जिसका लिङ्ग वचन कर्त्ता के लिङ्ग वचन के अनुसार हो: जैसे, घोड़े घास खाते हैं। कर्मप्रधान सकर्मक क्रिया वह है जिसका लिङ्ग वचन कर्म के लिङ्ग वचन के अनुसार हो; जैसे, घोड़ों से घास खाई जाती है। (हिन्दी में कर्मप्रधान क्रिया से रचित वाक्यों के लिखने की चाल प्राय: समीचीन नहीं समझी जाती।)

(ऊ) मोहन उठता है; मोहन से नहीं उठा जाता। दूसरे उदाहरण में अकर्मक क्रिया का लिङ्ग वचन न कर्त्ता के लिङ्ग वचन के अनुसार है न कर्म के परन्तु उसका रूप कर्मप्रधान क्रिया के रूप के समान देख पड़ता है इसलिये यह भावप्रधान क्रिया कहलाती है।

४ अकर्मक क्रिया का रूप जहां कर्मप्रधान क्रिया के रूप के समान देख पड़े वहां उसे भावप्रधान जानो: जैसे, उससे निष्प्रयोजन क्या बैठा जाता है। भावप्रधान क्रिया का लिङ्ग वचन न कर्त्ता के लिङ्ग वचन के अनुसार रहता है न कर्म के परन्तु उसमें भाव अर्थात धातु के अर्थ ही की प्रधानता रहती है।

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया का भेद बतलाओ—लड़के ने दर्पण तोड़ा। दर्पण लोहार से चौकठे में मढ़ा गया। मुझसे वह इति-

द्वारा कई बार कहा गया। वह चिट्ठी सोहन से लिखी गई। मुझसे बारंबार कहा गया कि सोहन चोर है परन्तु मैं ने विश्वास नहीं किया। उस स्त्री की प्रशंसा उसके परिश्रम के लिये की जाती है। तुमने वह पत्र लिखा था। तुमने वह गीत गाई थी। वह लड़का दीवार पर खड़ा था। उससे नहीं खड़ा रहा जाता। मोहन से नहीं बोला जाता। लोहा पानी में डूब जाता है।

पाठ १२। काल

क्रिया के करने या होने के समय का बतानेवाला 'काल' कहाता है और क्रिया के आश्रयभूत काल के बोधक चिन्ह को 'कालवाचक' कहते हैं।

सोहन अच्छा लिखता है, मोहन ने अच्छा लिखा, मोहन अच्छा लिखेगा। इन उदाहरणों में 'लिखता है' वर्त्तमान समय को सूचित करता है; इसलिये यह वर्त्तमान काल की क्रिया है; 'लिखा' भूतसमय को सूचित करता है—इससे यह नहीं सूचित होता कि मोहन इस समय अच्छा लिखता है परन्तु कुछकाल हुआ कि उसने अच्छा लिखा; इसलिये 'लिखा' भूतकाल की क्रिया है; 'लिखेगा' भविष्य समय को सूचित करता है—इससे यह सूचित होता है कि वह किसी आनेवाले समय में लिखेगा; इसलिये 'लिखेगा' भविष्यकाल की क्रिया है।

१ मुख्य काल तीन हैं—वर्त्तमान, भूत और भविष्य।

२ वर्त्तमान काल की क्रिया वह है जिसमें क्रिया का आरंभ और स्थिति हो; जैसे, 'जाता है' इस क्रिया पद में।

३ भूतकाल की क्रिया वह है जिसमें क्रिया का आरंभ और समाप्ति दोनों पाये जायं; जैसे 'गया' इस क्रियापद में।

४ भविष्यकाल की क्रिया वह है जिसमें क्रिया का आरंभ न हुआ हो पर होनेवाला हो; जैसे, 'जायगा' इस क्रियापद में।

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों में क्रियाओं के काल बतलाओ—सिपाही भागा। छुरी से लड़के का हाथ कट गया। मैं तुम्हारे पास कुछ फल भेजूंगा। उसने मुझे कल देखा। तुम क्या पढ़ते हो। थोड़ा परिश्रम करने से वह अच्छा लिखता है। तुम क्या देते हो। कल वह बहुत कुछ देगा। उसने क्या दिया। कल वह चला गया।

पाठ १३। भूतकाल

१ भूतकालिक क्रिया के ६ भेद हैं—सामान्यभूत, आसन्न-भूत, पूर्णभूत, सन्दिग्धभूत, अपूर्णभूत और हेतुहेतुमद्भूत।

(१) उसने भात पकाया—'पकाया' यह सामान्यभूत काल की क्रिया है क्योंकि इसके विषय में यही कहा गया है कि यह केवल भूत समय से सम्बन्ध रखती है और कोई भूतकाल की विशेषता से नहीं।

सामान्यभूतकालिक क्रिया वह है जिसमें क्रिया की पूर्णता तो हो परन्तु उसमें भूतकाल की विशेषता न पाई जाय; जैसे, 'उसने भात पकाया' इस वाक्य में।

(२) उसने भात पकाया है। 'पकाया है' आसन्नभूत काल की क्रिया है क्योंकि इसमें दो बातें पाई जाती हैं—(१) कि पकाने का कार्य आरंभ और समाप्त दोनों भूत समय में हुआ (२) कि उसका भूत समय वक्ता के वर्त्तमान समय के निकटवर्ती है।

आसन्नभूतकालिक क्रिया वह है जिसमें क्रिया का आरम्भ और समाप्ति दोनों भूतकाल में हो चुके हों पर उसका भूतकाल वक्ता के वर्त्तमान काल के समीपवर्त्ती हो; जैसे, 'उसने भात पकाया है' इस वाक्य में।

(३) उसने भात पकाया था। 'पकाया था' पूर्णभूतकाल की क्रिया है क्योंकि इसमें दो बातें पाई जाती हैं—(१) कि

पकाने का काम समाप्त हुआ उसमें कुछ कमी नहीं रह गई थी। (२) कि वह काम भूत समय में अत्यन्त दूरवर्त्ती काल में समाप्त हुआ।

पूर्णभूतकालिक क्रिया वह है जिसमें क्रिया की पूर्णता और भूतकाल की दूरता दोनों पाई जायं; जैसे, 'उसने भात पकाया था' इस वाक्य में।

(४) उसने भात पकाया होगा—'पकाया होगा' सन्दिग्धभूत काल की क्रिया है क्योंकि इसके विषय में यह कहा जा सकता है कि जिस कार्य का होना भूत समय में निश्चय किया गया था वह हुआ या नहीं इस में सन्देह है।

सन्दिग्धभूतकालिक क्रिया वह है जिसके भूतकाल के होने में अनिश्चय पाया जाय; जैसे, 'उसने भात पकाया होगा' इस वाक्य में।

(५) वह भात पकाता था—'पकाता था' अपूर्णभूतकाल की क्रिया है क्योंकि इसके विषय में यह कहा जा सकता है कि कार्य का समय तो भूत है परन्तु वह कार्य समाप्त नहीं हुआ।

अपूर्णभूतकालिक क्रिया वह है जिसमें क्रिया का भूतकाल तो पाया जाय परन्तु क्रिया की समाप्ति न पाई जाय; जैसे, 'वह भात पकाता था' इस वाक्य में।

(६) 'ईंधन पाता तो भात पकता'। 'पकाता' हेतुहेतुमद्भूतकाल की क्रिया है क्योंकि कारण उपस्थित न होने से इसकी सिद्धि भूत समय में नहीं पाई जाती।

हेतुहेतुमद्भूतकालिक क्रिया वह है जिसके भूतकाल में कारण की अनुपस्थिति से क्रिया की असिद्धि ज्ञात हो; जैसे 'ईंधन पाता तो भात पकाता' इस वाक्य में।

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों में भूतकालों को बतलाओ-लड़के ने चिट्ठी पढ़ी ; लड़के ने चिट्ठी पढ़ी है ; लड़के ने चिट्ठी पढ़ी थी ; लड़के ने चिट्ठी पढ़ी होगी। लड़का चिट्ठी पढ़ता था। लड़का चिट्ठी पढ़ता यदि समय मिलता। उसने मुझको देखा है ; हमने उनको देखा होगा ; मैं ने उसे देखा ; वह मुझको देखता था ; यदि मैं ताकता तो वह मुझको अवश्य देखता ; तू ने उनको देखा था।

पाठ १४ । वर्त्तमान, भविष्य

१ वर्त्तमानकालिक क्रिया के दो भेद हैं-सामान्यवर्त्तमान और सन्दिग्धवर्त्तमान।

(१) 'वह भात पकाता है'। 'पकाता है' वर्त्तमानकाल की क्रिया है क्योंकि इससे वर्त्तमान समय जाना जाता है अर्थात् भात के पकाने की क्रिया इसी समय में होती है।

सामान्यवर्त्तमानकालिक क्रिया वह है जिसमें क्रिया का आरंभमात्र बोधित हो; जैसे, 'वह भात पकाता है' इस वाक्य में।

(२) 'वह भात पकाता होगा'। 'पकाता होगा' सन्दिग्ध-वर्त्तमान काल की क्रिया है क्योंकि इससे जाना जाता है कि कार्य तो वर्त्तमान समय में हो रहा है परन्तु यह निश्चय नहीं कि वह कार्य हो रहा है कि नहीं।

सन्दिग्धवर्त्तमानकालिक क्रिया वह है जिसमें क्रिया के आरंभ होने में निश्चय न पाया जाय; जैसे, 'वह भात पकाता होगा' इस वाक्य में।

२ भविष्यकालिक क्रिया का कोई भेद नहीं है।

वह भात पकावेगा—'पकावेगा' भविष्यकाल की क्रिया है क्योंकि इससे यह जाना जाता है कि कार्य का आरंभ तो नहीं हुआ पर अभी कुछ काल में होनेवाला है। इसका लक्षण पहिले कह आये हैं।

उदाहरण नीचे लिखे वाक्यों में वर्त्तमान और भविष्य काल की क्रियाओं को बतलाओ—वह हल जोतता है। मोहन कल जायगा। तुम ठीक २ बयान करते हो। लड़का सच बोलता है। कुत्ता भूंकेगा। सांप रेंगता है। स्त्रियां गाती हैं। बच्चा बोलेगा। बिल्ली आती है। राजा की सवारी निकलेगी। वह आता होगा। मोहन पढ़ता होगा।

पाठ १५। भाव

आज्ञा, अनुमिति, संभावना इत्यादि भाव कहाते हैं। भाव दो हैं—विधि और संभावना।

(१) भात पकाओ या पकावे—'पकाओ' विधि क्रिया है क्योंकि इससे आज्ञा प्रकाशित होती है। 'पकावे' भी विधि क्रिया है क्योंकि इससे अनुमिति प्रकाशित होती है।

विधि क्रिया उसे कहते हैं जिसमें आज्ञा, अनुमति इत्यादि पाई जाती हैं; जैसे, 'भात पकाओ या पकावे इत्यादि' वाक्य में।

(२) 'वह भात पकावे'-'पकावे' सम्भावना क्रिया है क्योंकि इससे क्रिया के होने में सम्भव पाया जाता है।

सम्भावना क्रिया उसे कहते हैं जिसमें क्रिया के होने का संभव पाया जाय और किसी बात की चाह जानी जाय; जैसे, 'वह भात पकावे' इस वाक्य में।

पाठ १६। पूर्वकालिक

पूर्वकालिक भी क्रियाओं का भेद है।

(१) भात पका के खाया—'पका के' पूर्वकालिक क्रिया है क्योंकि इससे एक क्रिया का हो चुकना और दूसरी क्रिया की चाह प्रकाशित होती है और लिङ्ग, वचन और पुरुष का बोध नहीं होता।

(अ) पूर्वकालिक क्रिया वह है जिससे क्रिया का पूर्व में

हो चुकना और दूसरी क्रिया का उत्तर काल में होना सूचित हो; जैसे, 'भात पका के (या कर या करके) खाया' इस वाक्य में।

उदाहरण। नीचे लिखे वाक्यों में विधि, संभावना और पूर्वकालिक क्रियाओं को बतलाओ–मोहन पढ़े। वह मेरी टोपी लावे। तुम जाओ। वे पढ़ें। तू बैठ कर चला जा। मैं क्या करूं। हम बोलें। मोहन पढ़ कर सोता है। रोहन यहां आवे। सोहन बोल कर बिगाड़ न दे। उससे कहो वह जाय।

पाठ १७। क्रियाओं का रूपसाधन

१ क्रिया के साधारण रूप के 'ना' का लोप करने से जो शेष रह जाता है वह क्रिया का मूल वा धातु है; जैसे, 'लिखना' क्रिया का 'लिख' धातु है।

२ जैसे नामवाचक शब्द स्वरान्त होते हैं वैसे हो क्रियाओं की धातु भी स्वरान्त होती हैं। जैसे संज्ञाओं के लिङ्ग, वचन और पुरुष होते हैं वैसे क्रियाओं के भी।

३ क्रिया के धातु में 'ता' के जोड़ने से हेतुहेतुमद्भूत की क्रिया बनती है; जैसे, 'लिख' धातु से 'लिखता' हेतुहेतुमद्भूत बना।

(क) हेतुहेतुमद्भूत की क्रिया के आगे विभक्तियों के जोड़ने से सामान्यवर्त्तमान, सन्दिग्धवर्त्तमान और अपूर्णभूत की क्रियायें बनती हैं; जैसे, लिखता है; लिखता होगा; लिखता था इ०।

४ धातु यदि अकारान्त हो तो अकार को आकार आदेश करने से सामान्यभूत की क्रिया बनती है; जैसे, 'लिख' धातु से 'लिखा' बना। परन्तु 'करना' क्रिया के 'कर' धातु से 'करा' नहीं होता बरन 'किया' होता है।

धातु यदि आकारान्त हो तो उसके आगे 'या' जोड़ने से सामान्यभूत की क्रिया बनती है; जैसे, 'गाना', 'लाना', 'पाना' क्रियाओं के 'गा', 'ला', 'पा' धातुओं से 'गाया', 'लाया', 'पाया'